

तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष- 13, अंक - 6, मई 2025, मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarathi@gmail.com



**फूलों की मुस्कान में शिक्षा का विस्तार
प्रकृति बने जब गुरु तो खुले ज्ञान-संसार**

सरस्वती वंदना



हे वीणावादिनी! हे शारदे माँ!
विद्या की देवी! हमें ज्ञान दे माँ।

मिल-जुल के रहना यूँ हमको सिखा दे।
शिकवे गिले सब दिलों के मिटा दे।
सारा जगत लगे परिवार जैसा
सभी दूरियाँ तू दिलों से मिटा दे।
जो रूठे हुए हैं, उन्हें लें मना माँ।
विद्या की देवी, हमें ज्ञान दे माँ।
हे वीणावादिनी

अज्ञान तिमिर हर दिल से मिटा दे।
वैज्ञानिकों जैसी सोच बना दे।
आडंबरों से तोड़ के नाता।
तन-मन को अमृत-सा पावन बना दे।

दृढ़ इच्छाशक्ति का वरदान दे माँ।
विद्या की देवी! हमें ज्ञान दे माँ।
हे वीणावादिनी....

हों दुश्वारियाँ भी तो, हिम्मत न हारें।
लगी हो लगन, अपनी मंजिल को पा लें।
सूरज की तरह चमकें जगत में
भारत को पुनः शिखरों पर ला दें।
कुर्बानियों से कभी न डरें माँ।
विद्या की देवी हमें ज्ञान दे माँ।
हे वीणावादिनी....

संजीव शर्मा
हिंदी अध्यापक
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय खटौली
जिला- पंचकूला, हरियाणा



शिक्षा सारथी

मई 2025

प्रधान संरक्षक
नायब सिंह
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
महीपाल ढांडा
शिक्षा मंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
पंकज अग्रवाल
प्रधान सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल

डॉ. विवेक अग्रवाल
महानिदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा
जितेंद्र कुमार
निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा
एवं
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद्

अमित कुमार
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिजाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, वार्षिक: 150 रुपये

Published & Printed by Mini Ahuja on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by M/s. J.K. Offset Graphic Pvt. Ltd. at its printing press B-278, Okhla, Industrial Area, Phase -I,

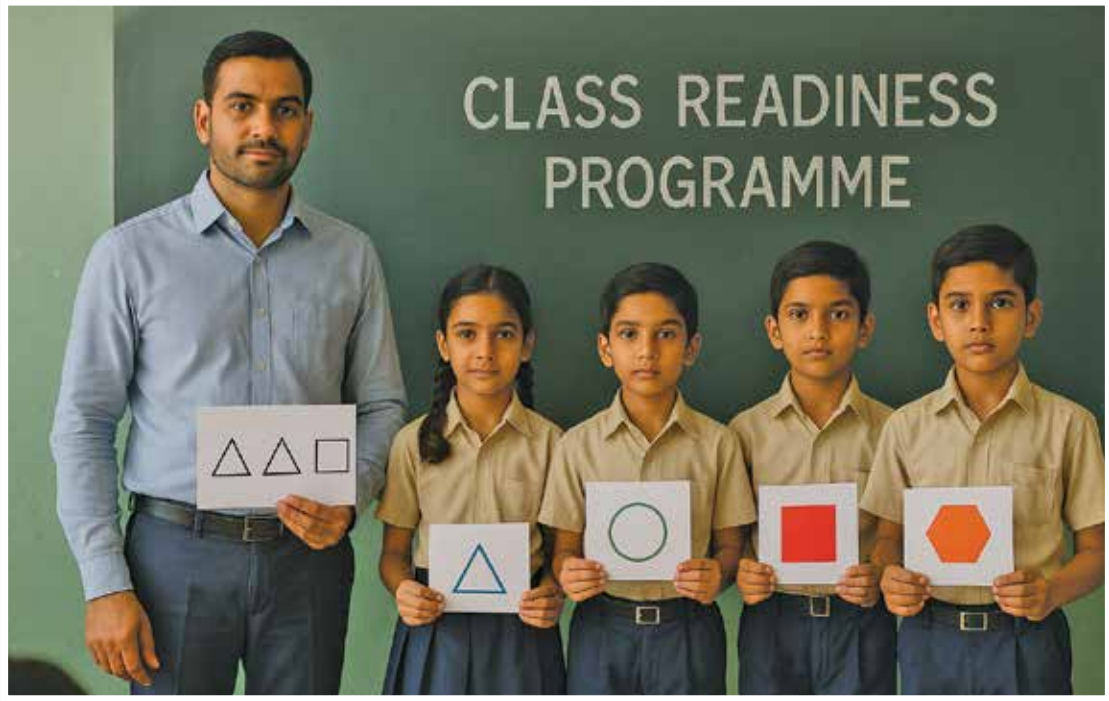
New Delhi-110020

Editor: Dr. Deviyani Singh.

“ सत्य के बाद मनुष्य
निर्भय हो जाता है
और झूठ के बाद
कायर। ”

- | | |
|---|----|
| » कक्षा तत्परता कार्यक्रम: आनंदपूर्ण व समावेशी शिक्षण की ओर प्रभावी कदम | 5 |
| » तकनीकी नवाचार और परिवर्तन का पथप्रदर्शक एससीईआरटी हरियाणा | 10 |
| » अंकनाद पहाड़े प्रतियोगिता: गणित से जीवन की ओर एक प्रेरक यात्रा | 13 |
| » विद्यांजलि: सामुदायिक भागीदारी से शिक्षा व्यवस्था सशक्त बनाने की पहल | 16 |
| » भोपाल शैक्षणिक यात्रा: इतिहास, संस्कृति और शिक्षा का अद्भुत संगम | 18 |
| » संघर्ष, सहभागिता एवं सफलता की गाथा है बलाना विद्यालय की परिवर्तन यात्रा | 20 |
| » निष्काम कर्मयोगी हैं यशपाल आर्य | 25 |
| » खेल-खेल में विज्ञान | 28 |
| » मम्मी की रसोई, मेरी प्रयोगशाला | 30 |
| » परिश्रम से मिलती है सुख की राह | 31 |
| » International Labour Day: Honoring Workers Worldwide | 32 |
| » World Red Cross Day: Celebrating Humanity... | 34 |
| » Rabindranath Jayanti: Celebrating the Legacy... | 37 |
| » Sukh Na | 39 |
| » Mother's Day: Honoring the Pillars of Love and Sacrifice | 40 |
| » Anti-Terrorism Day: A Stand for Peace and Unity | 43 |
| » Seeds | 45 |

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है।
यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।



कक्षा तत्परता कार्यक्रम: सीखने की नई राह

शिक्षा केवल पुस्तकों और पाठ्यक्रमों तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह बच्चे के भीतर संभावनाओं को पहचानने, निखारने और उन्हें आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ाने की प्रक्रिया है। लर्निंग गैप को समाप्त कर हर विद्यार्थी को अपनी कक्षा के स्तर के अनुरूप ज्ञान हो- इसी विचार को समर्पित है- कक्षा तत्परता कार्यक्रम, जो आजकल बेहद सफलता के साथ प्रदेश के विद्यालयों में चल रहा है। एक ऐसा प्रयास, जिसने शिक्षा को केवल औपचारिक अनुष्ठान से आगे बढ़ाकर अनुभव, सहभागिता और समझ की नई दिशा दी है।

आज की शिक्षा व्यवस्था की सबसे बड़ी चुनौती यह है कि बच्चे अक्सर पिछली कक्षा की अधिगम क्षमताओं के बिना ही अगली कक्षा में पहुँच जाते हैं। इससे उनकी समझ, आत्मविश्वास और सीखने की गति प्रभावित होती है। ऐसे में हरियाणा का यह दूरदर्शी कदम एक समयानुकूल और नवाचारी पहल है, जो बच्चों को उनकी शैक्षणिक यात्रा के लिए मज़बूत आधार देता है।

यह कार्यक्रम सिर्फ शिक्षण नहीं, एक अनुभव है। खेल, कहानी, समूह चर्चा और परियोजनाओं के ज़रिए बच्चे भाषा और गणित जैसे विषयों से न केवल जुड़ते हैं, बल्कि उन्हें जीते भी हैं। कक्षा का वातावरण अब संवादमूलक, समावेशी और सहयोगी बन गया है। शिक्षक अब मार्गदर्शक के साथ-साथ सह-शिक्षार्थी की भूमिका में हैं और बच्चे केवल उत्तर देने वाले नहीं, बल्कि विचार साझा करने वाले बन रहे हैं।

शिक्षा सारथी के इस अंक के माध्यम से हम उन सभी को नमन करते हैं, जिन्होंने इस परिवर्तन को संभव बनाया। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भावना के अनुरूप शिक्षा को आनंददायक, सुलभ और जीवनोपयोगी बनाने की दिशा में एक सशक्त कदम है। आइए, इस प्रेरक पहल से सीखते हुए हम सभी शिक्षा को और अधिक आनंदपूर्ण, अर्थपूर्ण और प्रभावशाली बनाने की दिशा में मिलकर आगे बढ़ें। इस कार्यक्रम के दौरान आपके कैसे अनुभव रहे- हमारे साथ साझा अवश्य करें। आपके विचारों और प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

-संपादक





कक्षा तत्परता कार्यक्रम: आनंदपूर्ण व समावेशी शिक्षण की ओर प्रभावी कदम



डॉ. प्रमोद कुमार



आज की स्कूली शिक्षा प्रणाली की सबसे गंभीर चुनौतियों में से एक गलत धारणा यह है कि सभी बच्चे अगली कक्षा में अपनी पिछली कक्षा की

अधिगम दक्षताओं के साथ आते हैं। लेकिन वास्तविकता कुछ और है। बड़ी तादाद में विद्यार्थी महत्वपूर्ण अधिगम अंतराल यानि लर्निंग गैप्स के साथ आगे बढ़ते हैं, विशेषकर बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान की बात करें तो जैसे-जैसे ये प्राथमिक स्तर की कक्षाएँ आगे बढ़ती हैं, ये अंतराल (लर्निंग गैप्स) और अधिक बढ़ते जाते हैं, जिससे विद्यार्थी अक्सर असहज, भ्रमित होते हैं और वे अपनी नई कक्षा की शैक्षणिक अपेक्षाओं को पूरा करने में खुद को असमर्थ महसूस करते हैं।

यह केवल ग्रामीण क्षेत्रों तक सीमित नहीं है, बल्कि





सीखने के संदर्भ में तत्परता अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि जब बच्चा, विद्यालय और परिवार तीनों तैयार हो जाते हैं, तभी बच्चे को श्रेष्ठ अधिगम अनुभव प्राप्त होते हैं। यह कार्यक्रम नये सत्र के शुरुआती दिनों में बच्चों को एक कक्षा से दूसरी कक्षा में सहज रूप से लाने के लिए काम करता है। यह न केवल उनकी पूर्व जानकारी की रिक्तता को भरता है, बल्कि आवश्यक कौशलों के विकास में भी सहायक होता है।

कक्षा तत्परता गतिविधियाँ हर स्कूल व कक्षा में थोड़ी भिन्न हो सकती हैं। इनमें विशेष रूप से फिटनेस, ध्यान, खेल, कला और आत्मनिर्भरता संबंधी गतिविधियाँ शामिल होती हैं। इसके जरिये खेल और क्रियात्मक पद्धतियों के माध्यम से शैक्षणिक कौशलों का विकास होता है।

डॉ. मनजीत कुमार
सहायक प्राध्यापक, डाइट मदीना, रोहतक

शहरी स्कूलों में भी यह समस्या कमोबेश देखने को मिलती है। जब विद्यार्थियों के पास बुनियादी पठन, लेखन या गणना करने के कौशल नहीं होते हैं, तो वे किसी भी नई विषयवस्तु को समझने और सीखने में संघर्ष करते हैं, वे अपने सहपाठियों से पीछे रह जाते हैं और यहाँ तक कि वे धीरे-धीरे सीखने में रुचि को खो देते हैं। अक्सर यह रुचि की कमी अनुशासन की समस्या के रूप में प्रकट होती है, जिसे कई बार केवल व्यावहारिक समस्या मानकर नजरअंदाज कर दिया जाता है।

इस गंभीर समस्या को समझते हुए, हरियाणा के विद्यालय शिक्षा विभाग ने एक अग्रणी कदम उठाया और कक्षा तत्परता कार्यक्रम (Class Readiness Pro-

gram - CRP) की शुरुआत की, जोकि इस वर्तमान शैक्षणिक वर्ष के साथ ही शुरु किया गया। यह कार्यक्रम न केवल बच्चों के अधिगम अंतराल को पाटने की एक नवोन्मेषी पहल है, बल्कि यह बच्चों में सीखने के प्रति प्रेम को फिर से जगाने की एक परिवर्तनकारी रणनीति भी है।

कक्षा तत्परता कार्यक्रम का दर्शन और संरचना-

कक्षा तत्परता कार्यक्रम केवल एक रेमिडियल प्रोग्राम नहीं है, बल्कि यह एक आनंददायक, आकर्षक और सार्थक शिक्षण का अनुभव है, जिसे इस उद्देश्य से डिज़ाइन किया गया है कि बच्चों को नई कक्षा में सफल होने के लिए आवश्यक मूलभूत कौशलों से सुसज्जित

किया जा सके।

यह कार्यक्रम शैक्षणिक सत्र की शुरुआत में 45 दिनों की एक सुनियोजित शैक्षणिक पहल के रूप में संरचित है, जिसका मुख्य फोकस गतिविधि-आधारित, परियोजना-आधारित और खेल-केंद्रित शिक्षण विधियों के माध्यम से भाषा और गणित विषयों में विद्यार्थियों की दक्षताओं को बढ़ाना है। इन गतिविधियों के पीछे यह विचार निहित है कि बच्चे 'करते हुए' सबसे बेहतर सीखते हैं और जब उन्हें अवसर मिलता है सोचने, चर्चा करने और गलती करने का, तभी सच्चा ज्ञान विकसित होता है।

यह कार्यक्रम भय और तनाव से मुक्त अधिगम को बढ़ावा देता है, जिससे कक्षा का वातावरण ऐसा बनता है जिसमें विद्यार्थी स्वयं को सुरक्षित, आत्मविश्वासी और सहभागिता के लिए प्रेरित महसूस करते हैं।

इससे शिक्षक बच्चों की सीखने की गति और उनके सीखने के तरीके -दोनों को पहचानने में सक्षम हो पाते हैं। पढ़ना, लिखना, सुनना और बोलना जैसे मौलिक कौशलों का विकास शिक्षकों, अभिभावकों, सहपाठियों और स्थानीय परिवेश की सक्रिय भागीदारी से किया जाता है। स्थानीय कहानियाँ, जनजीवन से जुड़ी कहानियाँ और बच्चों के रोजमर्रा के अनुभवों को पाठ्यक्रम से जोड़ना इस प्रक्रिया को और भी गहराई देता है।

कक्षा तत्परता कार्यक्रम की एक अनूठी विशेषता यह है कि यह बच्चों के वास्तविक जीवन से सीधे जुड़ा हुआ है। यह बच्चों को शैक्षणिक ज्ञान को अपने दैनिक जीवन से जोड़ने में सक्षम बनाता है। इस जुड़ाव से बच्चों





हमारी शिक्षा-व्यवस्था के केंद्र में विद्यार्थी है। अतः उसकी आवश्यकताओं की उपेक्षा नहीं की जा सकती। शिक्षक को प्रत्येक बच्चे की न्यूनतम अधिगम स्तर, उसकी रुचियाँ, क्षमताएँ और कमजोरियाँ जाननी चाहिए। यह कार्यक्रम शिक्षक को हर बच्चे को समझने का अवसर देता है। यह बच्चों को नए कक्षा परिवेश से परिचित कराता है और पूर्व, वर्तमान व आगामी पाठ्यक्रम के बीच पुल का कार्य करता है। यह बच्चों की अधूरी समझ को पूरा करता है और उन्हें नए विचारों को समझने तथा कक्षा की गतिविधियों में भाग लेने के लिए तैयार करता है। साथ ही, यह कार्यक्रम बच्चों में सामाजिक कौशल, भावात्मक नियंत्रण और आत्म-चेतना को बढ़ावा देता है, जिससे वे स्कूली वातावरण में सहज अनुभव करते हैं।

डॉ. सुमन लता
सहायक प्राध्यापक
डाइट मढ़ीना, रोहतक



को यह समझ आता है कि सीखना केवल परीक्षा पास करने के लिए नहीं, बल्कि जीवन में उपयोगी बनने के लिए आवश्यक है। पैसे के प्रबंधन, मापन, कहानी कहने, नक्शा बनाना और अवलोकन जैसी अवधारणाओं के माध्यम से यह जुड़ाव और भी मजबूत होता है। ये गतिविधियाँ बच्चों की विश्लेषणात्मक सोच, समस्याओं

को हल करने की क्षमता और निर्णय लेने के कौशल को भी मजबूती देती हैं।

साथ ही, डिजिटल उपकरणों के समावेशन के माध्यम से छात्रों को अपने आसपास के वातावरण और डिजिटल दुनिया के बीच संबंध स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे उनकी कार्यात्मक और





डिजिटल साक्षरता- दोनों को सशक्त किया जा रहा है।

क्रियान्वयन और निगरानी-

कक्षा तत्परता कार्यक्रम की एक विशेष बात यह है कि इसके क्रियान्वयन और निगरानी में कई स्तरों पर भागीदारों की सक्रिय भागीदारी है। यह बहु-स्तरीय सहभागिता ही इस कार्यक्रम को टिकाऊ और जवाबदेह बनाती है। पूरे हरियाणा में 8,400 से अधिक स्कूलों में 9 लाख से अधिक विद्यार्थियों तक पहुँचाने के लिए 34,000

से अधिक शिक्षक, मेंटर्स और अधिकारी एकजुट होकर कार्य कर रहे हैं। इस प्रकार की अभूतपूर्व एकजुटता शिक्षा के क्षेत्र में राज्य की दूरदर्शिता और प्रतिबद्धता को दर्शाती है। स्कूल स्तर पर शिक्षक इस कार्यक्रम के प्रमुख संचालक हैं। वे न केवल कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए उत्तरदायी हैं, बल्कि विद्यार्थियों की प्रगति का मूल्यांकन करने, पाठ योजनाओं को उनकी आवश्यकता अनुसार अनुकूलित करने और जरूरतमंद बच्चों को

कक्षा तत्परता कार्यक्रम यूनेस्को, यूनिसेफ और विश्व बैंक जैसी वैश्विक संस्थाओं द्वारा प्रोत्साहित की जाने वाली श्रेष्ठ प्रथाओं की गूँज है, जो स्कूल शिक्षा में अवस्थान्तरण के महत्वपूर्ण चरणों पर लर्निंग गैप को पाटने के लिए अल्पकालिक लेकिन प्रभावशाली हस्तक्षेप की सिफारिश करती हैं। ये संस्थाएँ प्रारंभिक उपचारात्मक शिक्षा, अनुभवजन्य शिक्षण और सामुदायिक भागीदारी को शैक्षिक समानता और गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए अत्यावश्यक मानती हैं।

कक्षा तत्परता कार्यक्रम को लागू कर हरियाणा ने एक दूरदर्शी कदम उठाया है जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उद्देश्यों के अनुरूप है, जो बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (एफएलएन) पर जोर देती है और आनंदमयी व समावेशी शिक्षण वातावरण की आवश्यकता को भी रेखांकित करती है।

राज्य द्वारा शिक्षा को आनंददायक, अर्थपूर्ण और समावेशी बनाने की प्रतिबद्धता अन्य राज्यों के लिए एक प्रेरणादायक मॉडल प्रस्तुत कर रही है।

अतिरिक्त सहायता देने की जिम्मेदारी भी निभा रहे हैं। शिक्षक अब पाठ्यपुस्तकों के पार जाकर रचनात्मक रूप से शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को पुनः परिभाषित कर रहे हैं।

शिक्षकों को सहयोग देने और गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए, मेंटर्स और ब्लॉक-स्तरीय अधिकारी नियमित रूप से स्कूलों का दौरा करते हैं। वे नियमित रूप से कक्षा तत्परता कार्यक्रम की कक्षाओं का निरीक्षण करते हैं और स्पॉट आकलन (SPOT Assessments) करते हैं- यह एक प्रारंभिक मूल्यांकन उपकरण है, जो विद्यार्थियों की बुनियादी कौशलों में प्रगति को मापने के लिए प्रयोग किया जाता है। स्पॉट आकलन केवल एक परीक्षण नहीं, बल्कि यह सीखने की एक खिड़की है जो यह दर्शाती है कि बच्चा किस दिशा में और कितनी दूरी तय कर चुका है। इन आकलनों के माध्यम से सुधार की आवश्यकता वाले क्षेत्रों की पहचान की जाती है और शिक्षकों व प्रशासन को वास्तविक समय में प्रतिक्रिया दी जाती है। इन आकलनों से प्राप्त आँकड़ों का उपयोग जिला और राज्य स्तरीय समीक्षाओं की बैठकों में किया जाता है, जिससे कार्यक्रम के प्रभाव को ट्रैक किया जा सके और इसमें समय-समय पर आवश्यक सुधारात्मक कदम उठाए जा सकें।

विद्यार्थियों और शैक्षिक परिवेश पर प्रभाव-

शिक्षकों और शिक्षा अधिकारियों से प्राप्त सकारात्मक प्रतिक्रियाएँ कक्षा तत्परता कार्यक्रम की सफलता और



इसके रूपांतरणकारी प्रभाव को दर्शाती हैं। स्कूलों में देखा जा रहा है कि कक्षा तत्परता कार्यक्रम के 45 दिनों में बच्चों की उपस्थिति, सहभागिता और आत्मविश्वास में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। शिक्षकों ने बताया है कि इससे कक्षाएँ अब अधिक जीवंत, समावेशी और सहभागी हो गई हैं, वहीं विद्यार्थी अब अधिक आत्मविश्वासी और सीखने के प्रति उत्साही हो गए हैं।

खेल आधारित और अनुभवजन्य शिक्षण पद्धति ने कई बच्चों को गणित और भाषा जैसे विषयों के प्रति भय से उबरने में मदद की है। बच्चे अब प्रश्न पूछने में संकोच नहीं करते, बल्कि उत्तर खोजने में आनंद महसूस करते हैं। इसने बच्चों में जिज्ञासा और कल्पना-शक्ति को भी फिर से जाग्रत किया है, जो उनके समग्र विकास के लिए अत्यंत आवश्यक गुण हैं।

कक्षा तत्परता कार्यक्रम ने शैक्षणिक अवधारणाओं को व्यावहारिक अनुभवों से जोड़कर यह सुनिश्चित किया है कि बच्चे केवल तथ्य रटें नहीं, बल्कि उन्हें समझें और उनका अपने दैनिक जीवन में प्रयोग कर सकें। इस प्रकार यह कार्यक्रम बच्चों को परीक्षा-उन्मुखता से हटाकर सीखने की समझ की ओर ले जा रहा है।

कहानी सुनाना, भूमिका निभाना, समूह चर्चा और स्पीड राउंड जैसी गतिविधियों के समावेश ने विद्यार्थियों के संप्रेषण, विश्लेषण और अवलोकन कौशल को बेहतर किया है।

साथ ही, शिक्षकों को भी इस से लाभ हुआ है। उन्हें शिक्षण की बेहतर समझ मिली है, वे अधिक विद्यार्थी-केंद्रित बनें हैं और उन्होंने कक्षा शिक्षण को बेहतर बनाने के लिए डिजिटल टूल्स का उपयोग करना सीखा है। कुछ शिक्षकों ने इसे अपने करियर का सबसे प्रेरणादायक अनुभव बताया है।

कक्षा तत्परता कार्यक्रम ने न केवल विद्यार्थियों के सीखने के तरीकों में बदलाव लाया है, बल्कि इसने यह भी दिखाया है कि स्कूल एक सीखने वाले समुदाय के रूप में कैसे कार्य कर सकते हैं।

वैश्विक श्रेष्ठ प्रथाओं की अनुरूपता और आगे की दिशा-

हरियाणा का कक्षा तत्परता कार्यक्रम यूनेस्को, यूनिसेफ और विश्व बैंक जैसी वैश्विक संस्थाओं द्वारा प्रोत्साहित की जाने वाली श्रेष्ठ प्रथाओं की गूँज है, जो स्कूल शिक्षा में अवस्थान्तरण के महत्वपूर्ण चरणों पर लर्निंग गैप को पाटने के लिए अल्पकालिक लेकिन प्रभावशाली हस्तक्षेप की सिफारिश करती हैं। ये संस्थाएँ प्रारंभिक उपचारात्मक शिक्षा, अनुभवजन्य शिक्षण और सामुदायिक भागीदारी को शैक्षणिक समानता और गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए अत्यावश्यक मानती हैं।

कक्षा तत्परता कार्यक्रम को लागू कर हरियाणा ने एक दूरदर्शी कदम उठाया है जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी-2020) के उद्देश्यों के अनुरूप है जो बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (एफएलएन) पर जोर देती



है और आनंदमयी व समावेशी शिक्षण वातावरण की आवश्यकता को भी रेखांकित करती है।

जैसे-जैसे यह कार्यक्रम आगे बढ़ रहा है, इसे और अधिक व्यापक स्तर पर लागू करने, इसमें समुदाय की गहन भागीदारी को सुनिश्चित करने और नई तकनीक का उपयोग करके शिक्षा को व्यक्तिगत अनुभव के रूप में ढालने की आवश्यकता है। अभिभावकों की सक्रिय भागीदारी, समुदाय आधारित निगरानी और सतत शिक्षक प्रशिक्षण इसके अगले चरण की कुंजी हो सकते हैं।

राज्य द्वारा शिक्षा को आनंददायक, अर्थपूर्ण और

समावेशी बनाने की प्रतिबद्धता अन्य राज्यों के लिए एक प्रेरणादायक मॉडल प्रस्तुत करती है। यह न केवल शिक्षा में समानता की दिशा में एक बड़ा कदम है, बल्कि यह सामाजिक समावेशन और बच्चों के आत्मबल को भी सशक्त करता है। यदि इसी ऊर्जा और सही दृष्टिकोण के साथ इसे सतत रूप से लागू किया जाए, तो कक्षा तत्परता कार्यक्रम गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लक्ष्य की दिशा में एक निर्णायक मोड़ साबित हो सकता है।

कार्यक्रम अधिकारी
शैक्षणिक शाखा, शिक्षा सदन, पंचकुला



तकनीकी नवाचार और परिवर्तन का पथप्रदर्शक एससीईआरटी हरियाणा



डॉ. अनिल सैनी



शिक्षा का क्षेत्र समय के साथ-साथ बदल रहा है, और वर्तमान में तेजी से बदलती दुनिया में शिक्षा प्राप्त करने और शिक्षा देने, दोनों ही माध्यमों में

परिवर्तन भी तेजी से हो रहा है। अब शिक्षा का मार्ग केवल किताबों तक सीमित नहीं रहा है। दुनिया का अधिकांश ज्ञान जहाँ पहले कक्षा-कक्षा से होकर गुजरता था, वहीं ज्ञान आज मोबाइल, कंप्यूटर और इंटरनेट के माध्यम से विद्यार्थियों तक पहुँच रहा है। वर्तमान शिक्षा को तकनीकी नवाचारों ने नए आयाम दिए हैं। शिक्षा को अधिक प्रभावी और व्यापक बनाने के लिए प्रतिदिन नई-नई आधुनिक तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है।

हरियाणा राज्य में स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में अनेक तकनीकी नवाचार और परिवर्तन हुए हैं, जिन्होंने राज्य में शिक्षा प्राप्त करने के परंपरागत ढाँचे को ही बदल कर रख दिया है। हरियाणा राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एससीईआरटी) ने शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए ऐसे अनेक तकनीकी नवाचार और परिवर्तन करने की पहल की है, जिससे न केवल शिक्षा प्रणाली को डिजिटल रूप से सशक्त किया जा रहा है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययन करने वाले अंतिम बच्चे तक भी शिक्षा की पहुँच को सुनिश्चित करने का शत-प्रतिशत प्रयास किया गया है।

एक शिक्षक के रूप में देखें तो हम पाएँगे कि किस प्रकार ये तकनीकी परिवर्तन हमारे शिक्षण को आसान बना रहे हैं और छात्रों के सीखने को अधिक रोचक एवं प्रभावी बना रहे हैं। एससीईआरटी, हरियाणा द्वारा संचालित विभिन्न कार्यक्रम शिक्षकों को डिजिटल सशक्तीकरण तो प्रदान कर ही रहे हैं, जिससे वे अपने शिक्षण कौशल को नए स्तर तक ले जा सकते हैं। साथ ही, ये कार्यक्रम छात्रों को अधिक इंटरैक्टिव और आकर्षक तरीके से ज्ञान प्राप्त करने में मदद कर रहे हैं।

मैं एक शिक्षक के रूप में एससीईआरटी से एक प्रतिभागी और संसाधन व्यक्ति (रिसोर्स पर्सन) के रूप में जुड़ा हुआ हूँ और इस संस्था द्वारा किए जा रहे प्रयासों को नजदीक से देख रहा हूँ। एजुकेशन टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में एससीईआरटी ने कई नवाचार किए हैं, जिससे शिक्षक और छात्र डिजिटल संसाधनों, स्मार्ट क्लासरूम, ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म, ई-लर्निंग कंटेंट और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) आधारित शिक्षा का लाभ उठा रहे हैं। एससीईआरटी राज्य में शिक्षा के क्षेत्र में जो नवाचार और परिवर्तन कर रही है, उनके लिए यह कहा जा सकता है कि-

स्वामोक्ष लपजों में असर गहरा होता है,

जो शोर न करे, वो बदलाव सच्चा होता है।

एससीईआरटी हरियाणा द्वारा लागू किए गए प्रमुख तकनीकी नवाचार व परिवर्तन :

1. शिक्षकों के लिए डिजिटल सशक्तीकरण-

एससीईआरटी, हरियाणा द्वारा DIKSHA-Haryana प्लेटफॉर्म का उपयोग कर हरियाणा के लगभग

6000 से अधिक शिक्षकों हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी-2020) के लक्ष्यों के अनुरूप ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। यह पहल शिक्षकों को आधुनिक शिक्षण विधियों और डिजिटल संसाधनों से अवगत कराती है। इस कार्यक्रम का लाभ यह है कि शिक्षक अपने समयानुसार इन प्रशिक्षण मॉड्यूल को पूरा कर सकते हैं, जिससे उनकी शिक्षण क्षमता में वृद्धि होती है।

इसके अतिरिक्त, Online Capacity Building Program for Teachers through LMS के माध्यम से शिक्षकों को एक व्यापक लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (एलएमएस) का उपयोग करके प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है, जिसमें उन्हें नवीनतम शिक्षण तकनीकों से अवगत कराया जाता है।

2. शिक्षण सामग्री का डिजिटलीकरण-

एससीईआरटी हरियाणा द्वारा विद्यार्थियों के लिए ई-कंटेंट विकसित किया गया है, जो दीक्षा-हरियाणा प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध कराया जाता है। यह शिक्षकों और छात्रों दोनों के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन है, जिससे शिक्षण अधिक रोचक और प्रभावी बनता है। हरियाणा सरकार ने एजुसेट के माध्यम से डिजिटल शिक्षण सामग्री का प्रसारण शुरू किया है। यह विशेष रूप से उन छात्रों के लिए फायदेमंद है जो दूरदराज के क्षेत्रों में रहते हैं और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने में कठिनाई महसूस करते हैं। दिसंबर 2024 तक कुल 677297 उपकरणों (मोबाइल और कंप्यूटर) तक दीक्षा-हरियाणा प्लेटफॉर्म की पहुँच, कार्यक्रम की सफलता को प्रकट करती है।





एससीईआरटी हरियाणा द्वारा 'रिवीजन की पाठशाला' कार्यक्रम शुरू किया गया है, जिसका उद्देश्य डिजिटल सामग्री की एक व्यापक लाइब्रेरी बनाना है, जिससे छात्रों को उनकी परीक्षा आवश्यकताओं के अनुरूप संसाधनों तक पहुँचने में मदद मिल सके। साथ ही, शिक्षकों को अपने शिक्षण अभ्यासों को छात्रों तक पहुँचाने, छात्रों की प्रगति का मूल्यांकन करने और छात्रों के बीच डिजिटल शिक्षा के लिए जागरूकता विकसित करने के लिए शैक्षिक सामग्री का खजाना मिलता है।

एससीईआरटी ने 'छुट्टी की पाठशाला' नामक एक अभिनव आउटरीच कार्यक्रम भी शुरू किया है, जो कि जून में गर्मी की छुट्टियों के दौरान छात्रों के सीखने की क्षमता में बढ़ोतरी करता है।

शिक्षण सामग्री का डिजिटलीकरण करने के क्रम में एससीईआरटी ने कक्षा 1 से 5 तक के लिए क्यूआर कोड युक्त (Energized) पाठ्यपुस्तकों की शुरुआत की है। इन पुस्तकों में दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करके छात्र डिजिटल सामग्री, वीडियो और इंटरैक्टिव संसाधनों तक पहुँच सकते हैं, जिससे उनकी समझ और सीखने की गति में सुधार हो रहा है। वहीं मेरी ई-पुस्तक नामक मोबाइल ऐप के माध्यम से प्राथमिक कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकों को डिजिटल रूप में उपलब्ध कराया

जा रहा है, जो कि छात्रों को किसी भी समय, कहीं भी अध्ययन करने की सुविधा प्रदान करती है।

3. साइबर सुरक्षा और डिजिटल साक्षरता-

वर्तमान डिजिटल युग में साइबर सुरक्षा एक महत्वपूर्ण एवं गंभीर चिंताजनक विषय बन गया है। एससीईआरटी हरियाणा द्वारा शिक्षकों और विद्यार्थियों को साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूक करने और ऑनलाइन खतरों से बचाने के लिए समय-समय पर विशेष कार्यक्रम एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। इस पहल से छात्रों तथा शिक्षकों को सुरक्षित इंटरनेट उपयोग के बारे में शिक्षित किया जा रहा है।

4. तकनीकी सुविधाओं से युक्त स्कूल एवं संस्थान-

एससीईआरटी हरियाणा ने विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (STEM) विषयों को बढ़ावा देने के लिए विशेष मंच स्थापित किए हैं। STEM मंच एक राज्यव्यापी पहल है जो माइक्रो-इम्पूवमेंट प्रोजेक्ट (एमआईपी) दृष्टिकोण के माध्यम से STEM शिक्षा को बढ़ावा देती है। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छोटे और प्रभावशाली शिक्षण सुधारों की पहचान करना, कक्षाओं में अनुभवात्मक शिक्षण को लागू करना तथा सीखने के परिणामों पर चिंतन करना और उन्हें साझा करना है।

इस कार्यक्रम से अब तक हरियाणा के 4000 से अधिक स्कूल, 11000 से अधिक अध्यापक, 15000 से अधिक विद्यार्थी जुड़ चुके हैं, जिन्होंने 14116 से अधिक प्रोजेक्ट सबमिट किए हैं। साथ ही एससीईआरटी हरियाणा द्वारा गुरुग्राम जिले में 'कंप्यूटर लैब ऑन व्हील्स' नामक पहल शुरू की गई है, जिसके तहत मोबाइल टेक्नोलॉजी चैन के माध्यम से दूर-दराज के स्कूलों में कंप्यूटर लैब की सुविधाएँ उपलब्ध कराई जा रही हैं।

5. गुणवत्ता सुधार एवं प्रभावी कक्षा अवलोकन के प्रयास-

ई-कंटेंट की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए एससीईआरटी, हरियाणा द्वारा विशेष रूप से एक गुणवत्ता मूल्यांकन प्रणाली विकसित की गई है। इससे यह सुनिश्चित किया जाता है कि डिजिटल सामग्री शिक्षण के लिए प्रभावी और उपयोगी हो।

TEACH टूल, विश्व बैंक द्वारा विकसित एक व्यापक कक्षा अवलोकन उपकरण है, जिसे एससीईआरटी, हरियाणा द्वारा राज्य के संदर्भ के अनुसार तैयार किया गया है। यह टूल शिक्षण पद्धतियों की गुणवत्ता के प्रमुख पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करता है। शिक्षण पद्धतियों की गुणवत्ता के 3 मुख्य घटक कक्षा

STATE COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING HARYANA

INTRODUCES

- WEBINAR SERIES 1.0
- SCIENCE LECTURE SERIES 2.0

AN ONLINE LEARNING PLATFORM FOR TEACHER EDUCATORS, TEACHERS AND STUDENTS

APRIL 2024 TO MARCH 2025

WATCH LIVE ON YOU TUBE CHANNEL: <https://www.youtube.com/c/econtenthyscertharyana>

AN INITIATIVE OF SCIENCE WING SCERT







TECHSKILLS@SCHOOL

Students' Club aimed to build 21st Century Government Schools in Haryana



In alignment with the
National Education
Policy (NEP2020)



Building Capacity and
Fostering Growth of both
- Students & Teachers.



STATE COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH & TRAINING (SCERT) HARYANA



संस्कृति, शिक्षक निर्देश और सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा पर यह विशेष ध्यान केन्द्रित करता है। इस कार्यक्रम के तहत अब तक कुल 218 पर्यवेक्षकों को प्रशिक्षित किया जा चुका है।

राज्य में शिक्षकों के प्रशिक्षण संस्थानों (डाइट्स) की गुणवत्ता की समीक्षा और सुदृढीकरण के लिए PRA-SHIKSHAK-Haryana नामक पहल चलाई जा रही है। यह पहल डाइट्स को अधिक प्रभावी और आधुनिक बनाने में सहायक सिद्ध हो रही है।

6. अधिकारियों का क्षमता निर्माण कार्यक्रम-

एससीईआरटी हरियाणा ने अपने अधिकारियों की क्षमता निर्माण में महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं, जो शिक्षा प्रणाली की रीढ़ हैं। अधिकारियों के पेशेवर कौशल को मजबूत करने के लिए नेतृत्व संवर्धन और शैक्षणिक विकास (LEAD) कार्यक्रम शुरू किया गया है। यह कार्यक्रम टीम प्रबंधन, निगरानी और मूल्यांकन, और 21वीं सदी के कौशल जैसे प्रमुख क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करता है। एनईपी-2020 के दृष्टिकोण के अनुरूप 21वीं सदी के कौशल पर आधारित कार्यक्रमों का नेतृत्व करने के लिए अधिकारियों का एक कुशल केंद्र तैयार करना इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है।

'लीड' नामक कोर्स के तहत सभी 22 जिलों में बीईओ, बीआरसी, सीआरसी, एबीआरसी, बीआरपी और डाइट संकाय सहित राज्य के सभी शिक्षा अधिकारियों को प्रशिक्षित किया गया। पाठ्यक्रम के लिए कुल 1656 से अधिक अधिकारियों ने पंजीकरण कराया और 1237 अधिकारियों ने इसे सफलतापूर्वक पूर्ण किया।

एससीईआरटी से जुड़ने पर शिक्षकों को कई लाभ मिलते हैं, जिनमें उनके शिक्षण कौशल में सुधार, नई तकनीकों की जानकारी, और एक व्यापक शैक्षणिक नेटवर्क तक पहुँच शामिल है।

1. पेशेवर विकास (प्रोफेशनल ग्रोथ)-

शिक्षक विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों और कार्यशालाओं में भाग लेकर अपनी शैक्षणिक दक्षता को बढ़ा सकते हैं। एससीईआरटी के माध्यम से वे शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे नवीनतम अनुसंधानों और तकनीकों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

2. शिक्षण पद्धतियों में सुधार-

एससीईआरटी द्वारा प्रदान किए गए डिजिटल संसाधनों और आधुनिक शिक्षण तकनीकों को अपनाकर शिक्षक अपनी कक्षाओं को अधिक रोचक और प्रभावी बना सकते हैं। नवाचार आधारित शिक्षण विधियों अपनाने से

विद्यार्थियों की समझ और सीखने की क्षमता में सुधार होता है।

3. नेटवर्किंग और सहयोग -

एससीईआरटी शिक्षकों को अन्य शिक्षकों, विशेषज्ञों और शिक्षा नीति निर्माताओं के साथ जुड़ने का अवसर प्रदान करता है। इससे शिक्षकों को एक-दूसरे से सीखने और अपनी शिक्षण समस्याओं का समाधान खोजने में मदद मिलती है।

4. संसाधन व्यक्ति (रिसोर्स पर्सन) बनने का अवसर-

एससीईआरटी न केवल शिक्षकों को प्रशिक्षित करता है, बल्कि उन्हें संसाधन व्यक्ति (रिसोर्स पर्सन) बनने का अवसर भी प्रदान करता है। शिक्षक अपने ज्ञान और अनुभव को साझा कर अन्य शिक्षकों को प्रशिक्षित कर सकते हैं और शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

एससीईआरटी हरियाणा द्वारा शिक्षा क्षेत्र में किए जा रहे तकनीकी नवाचारों ने शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए एक नई क्रांति ला दी है। डिजिटल शिक्षा, ऑनलाइन प्रशिक्षण, ई-कंटेंट, स्टैम लैब और साइबर सुरक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से राज्य में शिक्षा को जिस प्रकार से अधिक उन्नत और प्रभावी बनाया जा रहा है, एक शिक्षक के रूप में अगर देखें तो ये परिवर्तन राज्य में शिक्षा के स्तर, ढाँचे और शिक्षण प्रणाली में क्रांतिकारी बदलाव वाले सिद्ध होंगे। सभी शिक्षकों को चाहिए कि वे एससीईआरटी द्वारा प्रदान किए जा रहे अवसरों का अधिकतम लाभ उठाएँ और शिक्षा प्रणाली में सकारात्मक बदलाव लाने में अपनी भूमिका निभाएँ। भविष्य में अगर एससीईआरटी, हरियाणा शिक्षा में परिवर्तन और नवाचार के अपने इन प्रयासों को और अधिक प्रभावी ढंग से विस्तारित करता है, तो जल्द ही हरियाणा की शिक्षा प्रणाली राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में संपूर्ण देश में एक मॉडल बनकर उभर सकती है।

**प्रवक्ता, समाजशास्त्र
राष्ट्रीय संसाधन समूह सदस्य (निष्ठा)
राजसंवम विद्यालय, लोहारू, भिवानी, हरियाणा**





अंकनाद पहाड़े प्रतियोगिता : गणित से जीवन की ओर एक प्रेरक यात्रा



अजय कुमार



जब हम जीवन के बारे में सोचते हैं, तो हमारे मन में भावनाएँ, अनुभव और रिश्ते उभरते हैं। प्यार, संघर्ष, सफलता, विफलता - इन सबकी गहराई

हमें छूती है। परंतु जब गणित का नाम आता है, तो यह एक ठंडी, निर्जीव, और कठिन सी लगने वाली संकल्पना प्रतीत होती है। कई बच्चों और यहाँ तक कि बड़ों के लिए भी गणित डर का विषय बन जाता है। लेकिन अगर हम ज़रा ठहरकर सोचें, तो पाएँगे कि गणित सिर्फ अंकों और सूत्रों का ढेर नहीं है। यह जीवन को समझने की भाषा है। यह वह आधार है, जिस पर हमारे निर्णय, संतुलन, संबंध और संभावनाएँ खड़ी होती हैं।

गणित जीवन के हर पहलू में मौन रूप से उपस्थित रहता है-समय के प्रबंधन से लेकर धन की योजना बनाने तक, रिश्तों की गहराई से लेकर लक्ष्य की दूरी तय करने तक। यह हमें सिखाता है कि हर समस्या का कोई न कोई हल होता है। जरूरी नहीं कि हल तुरंत मिले, लेकिन अगर प्रयास निरंतर और सोच

स्पष्ट हो, तो उतर जरूर मिलता है।

प्रकृति और गणित: सौंदर्य की अदृश्य संरचना-

क्या आपने कभी गौर किया है कि फूलों की पंखुड़ियाँ किसी गणितीय क्रम में होती हैं? समुद्र की लहरें दोहराव में आती हैं? मधुमक्खियों का छत्ता एक पूर्ण षट्भुज संरचना में बना होता है?

आकाश में टिमटिमाते तारों में एक विशिष्ट संयोजन

होता है? जुगनुओं का प्रकाश एक क्रमबद्ध अंतराल में प्रकाशमय होता है? ये सभी गणित की अद्भुत उपस्थिति के प्रमाण हैं। प्रकृति में सौंदर्य केवल रंगों और ध्वनियों में नहीं, संरचना और अनुपात में भी है। और इन सभी का मूल है गणित।

गणित हमें वह दृष्टि देता है जिससे हम प्रकृति के नियमों को समझ सकते हैं। बारिश की बूँदों की आवृत्ति, चंद्रमा की कलाओं का चक्र, वृक्षों की शाखाओं का फैलाव इन सभी में छिपी हुई गणितीय संरचना हमें जीवन के भीतर की गहराई से जोड़ती है।

गणित और जीवन के संघर्ष: समानता का पाठ-

जीवन आसान नहीं होता। हमें अपने रास्ते में अनेक कठिनाइयाँ, असमंजस और चुनौतियाँ मिलती हैं। ठीक उसी तरह, गणित भी एक चुनौतीपूर्ण विषय है। एक कठिन प्रश्न जब सामने आता है, तो पहली बार में उसका हल समझ नहीं आता। पर जैसे ही हम बार-बार प्रयास करते हैं, पुनरावृत्ति करते हैं, सोच को दिशा देते हैं, वैसे-वैसे उतर सामने आता है।

गणित हमें धैर्य सिखाता है। यह बतता है कि असफलता अंत नहीं है, बल्कि वह अगला प्रयास करने की प्रेरणा है। एक प्रश्न के अनेक समाधान हो सकते हैं, और यही बात जीवन पर भी लागू होती





है। यह सोच जीवन को देखने का नजरिया बदल देती है।

गणित: जीवन के संतुलन का आधार-

सोचिए, अगर समय का कोई माप नहीं होता, दूरी की कोई गणना नहीं होती, धन का कोई लेखा-जोखा नहीं होता तो हमारी सभ्यता कहाँ होती? हम शायद जंगलों में खोए होते। गणित वह अदृश्य ढाँचा है जिस पर हमारी पूरी सभ्यता खड़ी है। यह केवल तकनीकी नहीं, बल्कि मानवीय भी है।

हर निर्णय चाहे वह व्यक्तिगत हो या सामूहिक

किस्सी न किस्सी गणनात्मक सोच पर आधारित होता है। हम समय कैसे बाँटते हैं, धन कैसे खर्च करते हैं, प्राथमिकताएँ कैसे तय करते हैं? इन सभी में गणित मौन रूप से सक्रिय रहता है। यह विवेक देता है, संतुलन सिखाता है और निर्णयों को स्पष्ट करता है।

गणित की निष्पक्षता: समता और न्याय का पाठ-

गणित का एक और गहरा पक्ष है यह भेदभाव नहीं करता। जाति, धर्म, रंग, भाषा गणित को इनसे कोई लेना-देना नहीं। एक समीकरण भारत में भी वही हल देता है

जो अमेरिका में। एक प्रमेय गरीब के लिए भी उतनी ही सटीक है जितनी अमीर के लिए। यही निष्पक्षता गणित को एक वैश्विक और मानवतावादी विषय बनाती है।

आज के समय में जब समाज अनेक स्तरों पर विभाजित है, तब गणित हमें समता का संदेश देता है। यह वह मंच है जहाँ सभी एक समान होते हैं। यह शिक्षा के क्षेत्र में सामाजिक समरसता की नींव रखता है।

हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है। विद्यार्थियों में गणित का भय न बने, वे गणित को दोस्त बनाएँ, गणित में रुचि लें। इस उद्देश्य को लेकर मौलिक शिक्षा विभाग हरियाणा सरकार की ओर से प्राथमिक विद्यार्थियों के लिए लोकमान्य तिलक अंकनाद पहाड़े समावेशन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें कक्षा चौथी एवं पाँचवीं के विद्यार्थियों ने बढ़चढ़कर भाग लिया।

लोकमान्य तिलक अंकनाद पहाड़े समावेशन प्रतियोगिता में राज्यभर के चयनित विद्यार्थियों ने भाग लिया। गणित की मूलभूत अवधारणाओं, विशेषकर पहाड़ों के सटीक उच्चारण, गति, और सामूहिक गणनात्मक अभ्यास पर आधारित इस प्रतियोगिता का उद्देश्य बच्चों में गणितीय आत्मविश्वास और गति विकसित करना था।

इस प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरण समारोह में प्रदेश के शिक्षा मंत्री श्री महीपाल दांडा मुख्यातिथि के रूप में पधारे। उन्होंने विद्यार्थियों को प्रशस्तित पत्र देकर सम्मानित किया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को 11,000, द्वितीय स्थान पर रहने वाले को 7,000, और तृतीय स्थान पर रहने वाले को 5,000 नकद पुरस्कार प्रदान किए गए। इस कार्यक्रम



अंकनाद प्रतियोगिता विद्यार्थियों के लिए अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि यह न केवल गणितीय ज्ञान को बढ़ावा देती है, बल्कि बच्चों में आत्मविश्वास, एकाग्रता और प्रतिस्पर्धात्मक भावना का भी विकास करती है। आज के दौर में जब गणित को कई बच्चे कठिन और उबाऊ मानते हैं, ऐसे में इस प्रकार की प्रतियोगिताएँ उन्हें गणित से जुड़ने का रचनात्मक और आनंददायक अवसर प्रदान करती हैं। खासतौर पर पहाड़ों (मल्टीप्लिकेशन टेबल्स) का अभ्यास बच्चों की मानसिक गणना क्षमता को तीव्र करता है, जो न केवल परीक्षा में बल्कि दैनिक जीवन में भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है। अंकनाद जैसे आयोजन उन्हें प्रेरित करते हैं कि वे गणित को डर या बोझ नहीं, बल्कि एक रोचक खेल की तरह लें। इसके माध्यम से छात्रों को मंच पर प्रदर्शन का अवसर भी मिलता है, जिससे उनका संकोच दूर होता है और संवाद कौशल में भी सुधार होता है। कुल मिलाकर, अंकनाद प्रतियोगिता न सिर्फ शैक्षणिक दृष्टि से लाभकारी है, बल्कि यह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास और जीवन कौशल निर्माण की दिशा में भी एक सार्थक प्रयास है।

पवन मिश्रा
मुख्य शिक्षक

राजकीय मॉडल संस्कृति प्राथमिक पाठशाला
धुलगढ़ गुलडेहरा, कुरुक्षेत्र, हरियाणा





में अतिरिक्त उपायुक्त पानीपत डॉ. पंकज यादव, जिला शिक्षा अधिकारी राकेश बूरा, खंड शिक्षा अधिकारी सुनीता कादियान और शिक्षा विभाग के अनेक अधिकारी उपस्थित रहे।

ऐसी प्रतियोगिताएँ बच्चों में गणित के प्रति रुचि, उत्साह, और नवाचार की भावना को बढ़ावा देती हैं। उन्होंने आशा जताई कि यह पहल भविष्य में और भी व्यापक स्तर पर आयोजित होगी और हरियाणा के छत्र गणित के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित करेंगे।

एक प्रेरणादायक पहल रही, जिसने गणित को बच्चों के मन से जोड़ने का कार्य किया। इस प्रतियोगिता में बच्चों ने न केवल पहाड़ों का ज्ञान प्रदर्शित किया, बल्कि आत्मविश्वास, स्मरण-शक्ति और मानसिक सजगता भी प्रस्तुत की।

हमारे विद्यालयों में अक्सर गणित को एक भयावह विषय के रूप में पढ़ाया जाता है। रटने की प्रवृत्ति, अनावश्यक जटिलताएँ, और रचनात्मकता का अभाव बच्चों को गणित से दूर करता है। जबकि गणित को कहानी की तरह, जीवन की तरह, और खेल की तरह पढ़ाया जाना चाहिए।

अंकनाद पहाड़े प्रतियोगिता जैसे कार्यक्रम बच्चों को यह अनुभव कराते हैं कि गणित नीरस नहीं, बल्कि रोमांचक हो सकता है। पहाड़ों को याद करना केवल संख्या सीखना नहीं, बल्कि मानसिक अनुशासन, क्रमबद्धता और आत्म-विश्वास का अभ्यास है।

कार्यक्रम अधिकारी
हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग, पंचकूला



गणित से जितना दूर भागोगे, यह उतना ही कठिन लगेगा

‘गणित से जितना दूर भागोगे, यह उतना ही कठिन लगेगा। लेकिन जितना इसे अपनाओगे, यह उतना ही सरल लगेगा। आज भारत गणित और विज्ञान के क्षेत्रों में अग्रणी भूमिका निभा रहा है और यह संभव हो पाया है हमारे प्राचीन गणितज्ञों की विरासत और आधुनिक शिक्षा प्रणाली के सम्मिलन से।’

-उक्त विचार प्रदेश के मानवीय शिक्षामंत्री श्री महीपाल ढांडा ने बीते दिनों ‘लोकमान्य तिलक अंकनाद पहाड़े समावेशन प्रतियोगिता’ के राज्य स्तरीय पुरस्कार वितरण समारोह में अपने संबोधन के दौरान व्यक्त किये। पानीपत में आर्य पीजी कॉलेज के सभागार में आयोजित इस कार्यक्रम में श्री ढांडा बतौर मुख्यातिथि शामिल हुए थे। इस अवसर पर उन्होंने बच्चों, शिक्षकों और अभिभावकों को संबोधित करते हुए गणित के महत्त्व पर विशेष बल दिया।

मानवीय शिक्षा मंत्री ने बच्चों को यह याद दिलाया कि भारत सदैव ज्ञान-विज्ञान का अग्रदूत रहा है। उन्होंने कहा कि गणित की बढौलत भारत आज दुनिया के श्रेष्ठ देशों में गिना जाता है। पूरी दुनिया भारत की ओर देख रही है। हमें गणित को गले लगाना होगा, तभी हम वैश्विक मंच पर भारत की भूमिका को और सशक्त बना सकेंगे।

उन्होंने कहा कि यह विषय न केवल परीक्षाओं के लिए, बल्कि दैनिक जीवन, करियर और आर्थिक समझदारी के लिए अत्यंत आवश्यक है।

उन्होंने विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया कि वे गणित से भयभीत न हों, बल्कि उसे समझने और आत्मसात करने की कोशिश करें।



गणित को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं रखना चाहिए, बल्कि इसे जीवन से जोड़कर पढ़ाना चाहिए। इसके लिए शिक्षकों को गणित के मानवीय और रचनात्मक पक्ष को उजागर करना होगा। एक सूत्र केवल परीक्षा में पास होने के लिए नहीं, बल्कि सोचने के ढाँचे को समझने के लिए सिखाया जाना चाहिए। अभिभावकों को भी चाहिए कि वे गणित को डर का विषय न मानें, बल्कि बच्चों के साथ बैठकर गणना के खेल खेलें, समय का प्रबंधन सिखाएँ, खरीददारी के समय उन्हें बजट बनाना सिखाएँ- सभी बातें गणित की दैनिक प्रस्तुति बन सकती हैं। अंकनाद पहाड़े समावेशन जैसी प्रतियोगिताएँ विद्यार्थियों में गणित के प्रति रुचि पैदा करेंगी। गणित का भय दूर होगा। विद्यार्थी गणित के प्रति दोस्ताना व्यवहार

अपनाएँगे।

-सुमन मलिक
गणित शिक्षिका

राजकीय उच्च विद्यालय आहुलाना
खंड- कथूर, सोनीपत, हरियाणा



गणित केवल बुद्धि नहीं, बल्कि आत्मनुशासन, समर्पण और प्रयास का विषय है। यह एक दर्शन है जो बताता है कि प्रत्येक समस्या का हल है, यदि दृष्टिकोण सही हो। यह हमें बार-बार प्रयास करने, अपनी भूलें पहचानने और सटीकता की ओर बढ़ने की प्रेरणा देता है।

गणित हमें मानसिक रूप से सजग बनाता है। यह तर्क और सृजन का संतुलन है। यही संतुलन व्यक्ति को जीवन में सफल बनाता है, चाहे वह वैज्ञानिक हो, व्यापारी, लेखक, या कलाकार। इसलिए आज समय है कि हम सब मिलकर गणित को फिर से जीवन का अभिन्न अंग बनाएँ, खेल की तरह, सोच की तरह, और एक सच्चे मित्र की तरह।

श्रीशपाल जांगड़ा
प्राध्यापक गणित

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बलाही, कुरुक्षेत्र, हरियाणा





विद्यांजलि : सामुदायिक भागीदारी से शिक्षा व्यवस्था सशक्त बनाने की पहल



सुरेश राणा



शिक्षा किसी भी समाज और राष्ट्र की प्रगति की आधारशिला होती है। भारत जैसे विशाल देश में, जहाँ लाखों बच्चे सरकारी और सहायता प्राप्त स्कूलों में शिक्षा ग्रहण करते हैं, वहाँ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और बेहतर संसाधनों की उपलब्धता एक महत्वपूर्ण आवश्यकता बन जाती है। इसी दिशा में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने विद्यांजलि कार्यक्रम की शुरुआत की है, जिसका उद्देश्य सरकारी और सहायता प्राप्त स्कूलों को सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से सशक्त बनाना है।

यह कार्यक्रम स्कूलों को समाज के विभिन्न वर्गों-निजी कंपनियों, स्वयंसेवी संगठनों, शिक्षाविदों, सेवानिवृत्त अधिकारियों, और आम नागरिकों से जोड़ता है ताकि वे अपने ज्ञान, कौशल, और संसाधनों से शिक्षा प्रणाली को मजबूती प्रदान कर सकें।

भारतीय समाज में शिक्षा का स्थान हमेशा से महत्वपूर्ण रहा है। प्राचीन काल में गुरुकुल प्रणाली के अंतर्गत शिक्षा व्यवस्था पूरी तरह से समुदाय के सहयोग पर निर्भर थी। बौद्ध और जैन मठों में भी शिक्षा की समृद्ध

परंपरा थी, जहाँ विद्यार्थी विभिन्न विषयों का अध्ययन करते थे। प्रसिद्ध नालंदा और तक्षशिला विश्वविद्यालय भी समाज के अर्थिक और बौद्धिक सहयोग से संचालित होते थे।

गाँवों में शिक्षा का दायित्व स्थानीय समुदाय का होता था, जहाँ बुजुर्ग और विद्वान बच्चों को पढ़ाने का कार्य करते थे। जमींदार और व्यापारी विद्यालयों की स्थापना और उनके रखरखाव में योगदान देते थे। उत्सवों और धार्मिक आयोजनों के दौरान विद्यालयों के लिए दान देने की परंपरा थी।

सभी सरकारी विद्यालयों को भूमि समुदाय द्वारा उपलब्ध करवाई गई है। उस भूमि पर भवन भी समुदाय द्वारा चंदा एकत्रित करके बनाये गए थे। इन ऐतिहासिक परंपराओं से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा व्यवस्था हमेशा से समाज के सहयोग से चलती आई है।

विद्यांजलि कार्यक्रम इसी प्राचीन विचारधारा को पुनर्जीवित करने का प्रयास है, जहाँ हर नागरिक शिक्षा के विकास में योगदान दे सकता है।

विद्यांजलि कार्यक्रम के अंतर्गत योगदान के क्षेत्र-

1. स्कूल सेवाओं/गतिविधियों में भाग लेना

इस श्रेणी में, स्वयंसेवक अपने समय और कौशल का उपयोग करके स्कूलों में सह-पाठ्यक्रमीय गतिविधियों

का संचालन कर सकते हैं। इसके अंतर्गत शामिल हैं:

शैक्षिक सहायता- गणित, विज्ञान, अंग्रेजी, सामाजिक विज्ञान आदि विषयों की अतिरिक्त कक्षाएँ लेना।

कला, संगीत और खेलकूद- बच्चों को संगीत, नृत्य, रंगमंच, चित्रकला और खेलकूद से जोड़ने के लिए कार्यशालाएँ आयोजित करना।

करियर मार्गदर्शन और मेंटरशिप- छात्रों को उच्च शिक्षा, प्रतियोगी परीक्षाओं और करियर के अवसरों के बारे में मार्गदर्शन देना।

स्वास्थ्य और स्वच्छता जागरूकता- स्वास्थ्य, पोषण, स्वच्छता और व्यक्तिगत देखभाल से संबंधित सत्र आयोजित करना।

तकनीकी शिक्षा छात्रों को कंप्यूटर, कोडिंग, साइबर सुरक्षा, और डिजिटल साक्षरता के बारे में शिक्षित करना।

संपत्ति, सामग्री एवं उपकरण प्रदान करना

स्वयंसेवक या संगठन स्कूलों को आवश्यक भौतिक संसाधन उपलब्ध कराकर उनके बुनियादी ढाँचे को मजबूत कर सकते हैं। इसके अंतर्गत शामिल हैं:

शैक्षिक उपकरण- किताबें, कॉपीयों, स्मार्ट क्लास के लिए प्रोजेक्टर, कंप्यूटर और अन्य डिजिटल उपकरण।

खेल सामग्री- क्रिकेट, फुटबॉल, बैडमिंटन, कबड्डी आदि खेलों के लिए आवश्यक सामान।





विज्ञान और कंप्यूटर प्रयोगशालाओं के लिए उपकरण- स्कूलों को आधुनिक लैब सुविधाओं से जोड़ने के लिए योगदान।

स्वच्छता एवं स्वास्थ्य संबंधित सहायता- स्कूलों में स्वच्छ पेयजल, शौचालयों की व्यवस्था, सैनिटरी नैपकिन, और स्वास्थ्य परीक्षण शिविर आयोजित करना।

बुनियादी ढाँचा सुधार- कक्षाओं के लिए फर्नीचर, बिजली की आपूर्ति, ब्लैकबोर्ड, पंखे, और अन्य बुनियादी सुविधाओं को बेहतर बनाना।

विद्यांजलि से जुड़ने की प्रक्रिया-

स्कूलों के लिए-

1. **पंजीकरण करें-** सरकारी और सहायता प्राप्त स्कूलों को Vidyanjali पोर्टल पर पंजीकरण करना होगा।

2. **आवश्यकताओं को साझा करें-** स्कूलों को यह बताना होगा कि उन्हें किन सेवाओं या सामग्री की आवश्यकता है।

स्वयंसेवकों के लिए-

1. **स्वयंसेवक के रूप में पंजीकरण करें-** इच्छुक व्यक्ति या संगठन विद्यांजलि पोर्टल पर अपनी प्रोफाइल बनाकर रजिस्ट्रेशन कर सकते हैं।

2. **स्कूलों की आवश्यकताएँ खोजें-** स्वयंसेवक उन स्कूलों की आवश्यकताओं को देख सकते हैं जो उनकी रुचि और विशेषज्ञता के अनुरूप हों।

3. **योगदान दें-** स्वयंसेवक या संगठन सीधे स्कूल से संपर्क करके योगदान कर सकते हैं।

4. **प्रतिक्रिया दें और सुधार करें-** दोनों पक्ष (स्कूल और स्वयंसेवक) अपने अनुभव साझा कर सकते हैं जिससे कार्यक्रम की गुणवत्ता में सुधार किया जा सके।

विद्यांजलि केवल एक सरकारी पहल नहीं है, बल्कि यह शिक्षा सुधार की दिशा में एक सामाजिक आंदोलन है, जो प्रत्येक नागरिक को राष्ट्र की प्रगति में योगदान देने का अवसर प्रदान करता है। जिस प्रकार प्राचीन काल में शिक्षा व्यवस्था समाज के सहयोग से चलती थी, उसी प्रकार विद्यांजलि समुदाय को स्कूलों से जोड़कर एक सशक्त शिक्षा प्रणाली की स्थापना करने का प्रयास कर रही है।

यदि आप भी शिक्षा क्षेत्र में बदलाव लाने और समाज में सकारात्मक योगदान देने की इच्छा रखते हैं, तो आज ही विद्यांजलि से जुड़ें! Vidyanjali पोर्टल पर जाकर पंजीकरण करें और इस सार्थक पहल का हिस्सा बनें।

सरकारी स्कूलों में विद्यांजलि कार्यक्रम की आवश्यकता क्यों?

भारत में सरकारी और सहायता प्राप्त स्कूलों की संख्या बहुत अधिक है, और लाखों छात्र यहाँ शिक्षा प्राप्त करते हैं। हालाँकि, कई सरकारी स्कूलों को बुनियादी सुविधाओं, शिक्षण संसाधनों और सह-पाठ्यक्रमीय गतिविधियों की कमी का सामना करना पड़ता है। यही



कारण है कि विद्यांजलि कार्यक्रम की आवश्यकता सरकारी स्कूलों में विशेष रूप से महसूस की जाती है। यह पहल स्कूलों को समुदाय और निजी क्षेत्र के सहयोग से सशक्त बनाने का अवसर प्रदान करती है।

1. सरकारी स्कूलों में बुनियादी ढाँचे की कमी-

शौचालय, स्वच्छ पेयजल, और बिजली की कमी कई सरकारी स्कूलों में स्वच्छता और बुनियादी सुविधाओं की समस्या बनी रहती है।

पुस्तकालय और प्रयोगशालाओं की अनुपलब्धता- विज्ञान, गणित और कंप्यूटर शिक्षा के लिए आवश्यक लैब और पुस्तकालय संसाधनों की कमी देखी जाती है।

खेल के मैदान और खेल सामग्री का अभाव- कई स्कूलों में खेलकूद के लिए पर्याप्त स्थान और उपकरण उपलब्ध नहीं होते।

विद्यांजलि कार्यक्रम के तहत स्वयंसेवक और संगठन स्कूलों को फर्नीचर, प्रयोगशाला उपकरण, डिजिटल संसाधन, स्वच्छता किट, और अन्य आवश्यक सामग्री दान कर सकते हैं। इससे स्कूलों की मूलभूत संरचना मजबूत होती है।

2. शिक्षकों और शिक्षण संसाधनों की कमी-

कई सरकारी स्कूलों में शिक्षकों की संख्या सीमित होती है, जिससे छात्रों को समुचित मार्गदर्शन नहीं मिल पाता।

डिजिटल शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षित शिक्षकों की भी कमी होती है।

स्वयंसेवक अतिरिक्त शिक्षण सहायता, करियर गाइडेंस, डिजिटल शिक्षा, और व्यावसायिक प्रशिक्षण देकर इस कमी को पूरा कर सकते हैं। सेवानिवृत्त शिक्षक और पेशेवरों के योगदान से छात्रों को बेहतर शिक्षा मिल सकती है।

3. सह-पाठ्यक्रमीय गतिविधियों की अनुपलब्धता-

सरकारी स्कूलों में कला, संगीत, नृत्य, रंगमंच और अन्य सह-पाठ्यक्रमीय गतिविधियाँ बहुत सीमित होती हैं। ये गतिविधियाँ छात्रों के समग्र विकास के लिए आवश्यक हैं, लेकिन कई स्कूलों में इन्हें बढ़ावा देने के लिए संसाधन नहीं होते। स्वयंसेवक संगीत, चित्रकला, खेल, नृत्य, थिएटर, और योग जैसी गतिविधियों का

संचालन कर सकते हैं, जिससे छात्रों का समग्र विकास हो सके।

4. छात्रों में करियर मार्गदर्शन और प्रेरणा की कमी-

सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले कई छात्र उच्च शिक्षा और करियर के अवसरों के बारे में जागरूक नहीं होते।

वे विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं, व्यावसायिक पाठ्यक्रमों, और उद्योग की आवश्यकताओं से अनभिज्ञ रहते हैं। पेशेवर और करियर काउंसलर छात्रों को सही करियर मार्गदर्शन दे सकते हैं। विभिन्न उद्योगों और व्यवसायों के विशेषज्ञ उन्हें आधुनिक कौशल और अवसरों से अवगत करा सकते हैं।

5. सरकारी स्कूलों को सामाजिक सहयोग की आवश्यकता-

सरकारी स्कूलों में कई छात्र गरीब या वंचित पृष्ठभूमि से आते हैं, जिनके पास निजी स्कूलों जैसी सुविधाएँ नहीं होतीं। ऐसे में समाज का दायित्व बनता है कि वे शिक्षा में योगदान दें और सरकारी स्कूलों को सशक्त बनाएँ।

समाज के विभिन्न वर्ग कॉर्पोरेट कंपनियों, एनजीओ, स्वयंसेवक, सेवानिवृत्त व्यक्ति और युवा पेशेवर अपने ज्ञान, कौशल और संसाधनों से सरकारी स्कूलों को सहयोग दे सकते हैं।

इससे छात्रों को बेहतर शिक्षा, सुविधाएँ और अवसर मिल सकते हैं, जिससे वे भविष्य में आत्मनिर्भर बन सकें।

विद्यांजलि कार्यक्रम सरकारी स्कूलों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक प्रभावी समाधान प्रदान करता है। यह कार्यक्रम शिक्षा में सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहित करता है और सरकारी स्कूलों को संसाधनों, विशेषज्ञता और मार्गदर्शन से जोड़ता है।

यदि हम सभी शिक्षा के क्षेत्र में योगदान दें, तो सरकारी स्कूलों की स्थिति में सुधार किया जा सकता है और हर छात्र को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिल सकता है। आज ही विद्यांजलि से जुड़ें और सरकारी स्कूलों को सशक्त बनाने में अपना योगदान दें!

पीजीटी हिंदी

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मुर्तजापुर कुरुक्षेत्र, हरियाणा





भोपाल शैक्षणिक यात्रा: इतिहास, संस्कृति और शिक्षा का अद्भुत संगम

संदीप कुमार



कल्पना कीजिए एक ऐसे सरकारी विद्यालय की, जहाँ आपका स्वागत गरिमापूर्ण एवं भव्य अंदाज़ में डम की लाल पर परेड करते हुए विद्यार्थी करते

हैं। इस विद्यार्थी ब्रिगेड को सभी प्रकार के आदेश कोई अध्यापक नहीं, बल्कि एक विद्यार्थी कमांडर ही दे रहा होता है, और पूरी टीम उन आदेशों का दृढ़ता से पालन कर रही होती है। अध्यापक केवल मार्गदर्शक की भूमिका में साथ दिखाई देते हैं।

इसके पश्चात् साफ़-सुथरी स्कूल यूनिफॉर्म पहने हुए विद्यार्थी तिलक लगाकर आपका स्वागत करते हैं। आप आगे बढ़ते हैं और अत्यंत अनुशासित ढंग से संचालित हो रही कक्षाओं को देखते हैं। आप एक सुसज्जित एवं सुव्यवस्थित पुस्तकालय में पहुँचते हैं, जहाँ विद्यार्थी शांत वातावरण में अध्ययनरत हैं। ढेर सारी ज्ञानवर्धक एवं रोचक पुस्तकें खुली अलमारियों में व्यवस्थित ढंग से सजी हुई हैं, जिन्हें कोई भी विद्यार्थी अपनी सुविधा अनुसार पढ़ सकता है। पढ़ने के उपरांत वे पुस्तक को यथास्थान रखकर अनुशासित रूप में अपनी कक्षाओं में लौट जाते हैं। पुस्तकालय में एक विद्यार्थी ही लाइब्रेरियन की भूमिका निभा रहा है, और पुस्तकालय से संबंधित सभी प्रश्नों के उत्तर उसके पास हैं।

इसके बाद आप विद्यालय की विभिन्न प्रयोगशालाओं जैसे रसायन प्रयोगशाला, भौतिक विज्ञान प्रयोगशाला, जीवविज्ञान प्रयोगशाला, कंप्यूटर लैब एवं

गतिविधि कक्ष का भ्रमण करते हैं। आप पाते हैं कि इनका संचालन एवं रखरखाव भी विद्यार्थियों द्वारा ही किया जा रहा है। सभी विद्यार्थी पूर्ण अनुशासन के साथ प्रयोगों में संलग्न हैं।

इसके पश्चात् जब आप खेल मैदान की ओर बढ़ते हैं तो देखते हैं कि नियोजित ढंग से कुछ टीम पूर्ण खेल भावना के साथ खेल रही हैं। हाथ में सीटी लिए एक विद्यार्थी उन्हें कमांड दे रहा है एवं उन्हें खेल की बारीकियाँ समझा रहा है। आपके पूछने पर बताया जाता है कि यहाँ विद्यार्थियों की रुचि के अनुसार उन्हें खेल गतिविधियों में सममिलित किया जाता है। साथ ही, जो वरिष्ठ छात्र-छात्राएँ खेल के क्षेत्र में अग्रणी रहे हैं, वे



अपने अनुभव साझा करते हैं एवं दूसरों को प्रशिक्षण देते हैं।

आप स्कूल डेवलपमेंट कक्ष में प्रवेश करते हैं, जहाँ छात्र-छात्राएँ नए-नए प्रयोग कर रहे हैं, नवाचार के माध्यम से यंत्र बना रहे हैं। इसके बाद आप कला कक्षा में पहुँचते हैं, जहाँ कुछ छात्र-छात्राएँ बेहतरीन चित्रकलाएँ एवं कलाकृतियाँ तैयार कर रहे हैं। जब आप दीवारों की ओर नज़र डालते हैं, तो देखते हैं कि वहाँ प्रदर्शित सभी चित्रकृतियाँ छात्रों द्वारा ही बनाई गई हैं, कोई भी बाहरी सामग्री नहीं खरीदी गई है। विद्यालय की दीवारें स्वयं विद्यार्थियों की कला प्रतिभा की गवाही दे रही हैं।

कंप्यूटर कक्ष में भी आप यही अनुशासित और ज्ञानपरक वातावरण पाते हैं। शांतिपूर्वक विद्यार्थी सीख रहे हैं, सीनियर छात्र-छात्राएँ दूसरों को मार्गदर्शन दे रहे हैं और अध्यापक मार्गदर्शक के रूप में साथ हैं।

अब आप प्रिंसिपल से मिलने की इच्छा व्यक्त करते हैं। आपको एक छात्र से मिलवाया जाता है, जो मुस्कुराते हुए कहता है, आपका हमारे विद्यालय में स्वागत है, बताइए मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ, मैं ही इस विद्यालय का प्रिंसिपल हूँ। यह सुनकर आप आश्चर्यचकित रह जाते हैं और सोचते हैं कि शायद यह कोई विशेष दिवस है, जब विद्यार्थियों को शिक्षक एवं प्रिंसिपल की भूमिका सौंपी जाती है।

लेकिन जब आप इस व्यवस्था के बारे में गहराई से जानना चाहते हैं, तो आपको बताया जाता है कि इस विद्यालय में विद्यार्थियों को ही नेतृत्व की जिम्मेदारी दी जाती है। उन्हें 'छात्र प्रिंसिपल' नियुक्त किया जाता है और विद्यालय संचालन से संबंधित अनेक अधिकार उनके पास होते हैं। यह छात्र-प्रिंसिपल विद्यालय एवं विद्यार्थियों के हित में स्वतंत्र रूप से निर्णय ले सकता है।

यह कोई कल्पना नहीं, बल्कि सुभाष उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, भोपाल की वास्तविक व्यवस्था है, जिसे हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग द्वारा भेजी गई 110 विद्यार्थियों एवं 10 एस्कॉर्ट शिक्षकों की





टीम ने सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के दौरान अनुभव किया।

हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग द्वारा कुछ समय पहले हरियाणा राज्य के सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 11वीं के ललित कला विषय के छात्र-छात्राओं को मध्यप्रदेश के भोपाल में शैक्षणिक भ्रमण पर ले जाया गया। इस भ्रमण हेतु राज्य के प्रत्येक जिले से पाँच प्रतिभावान विद्यार्थियों का चयन किया गया। कुल 110 विद्यार्थियों में 55 छात्र एवं 55 छात्राएँ सम्मिलित थे। उनके साथ-साथ पाँच महिला एवं पाँच पुरुष एस्कॉर्ट शिक्षक भी भेजे गए।

इस भ्रमण के अंतर्गत विद्यार्थियों ने कर्क रेखा, भीमबेटका की गुफाएँ, उदयगिरि की पहाड़ियों के शैलचित्र, भोपाल जनजातीय संग्रहालय, साँची स्तूप एवं अन्य कई ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्थलों का अवलोकन किया। इस यात्रा की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह रही कि भ्रमण के सभी स्थल विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम से संबंधित थे। जिन चित्रों और स्थलों को अब तक विद्यार्थियों ने केवल पाठ्यपुस्तकों में देखा था, उन्हें प्रत्यक्ष रूप से देखकर वे अत्यंत उत्साहित और आनंदित हुए।

सुभाष उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, भोपाल के प्रधानाचार्य के व्यक्तित्व व विचारों ने हमें काफी प्रभावित किया। उनकी दूरदर्शी सोच और विद्यार्थियों के प्रति समर्पण को अनुभव करना अत्यंत प्रेरणादायक था। उन्होंने बताया कि वे विगत कई वर्षों से इस विद्यालय के प्रधानाचार्य हैं और इस प्रकार की अभिनव व्यवस्था के निर्माण के लिए उन्होंने तन-मन-धन से परिश्रम किया है। उन्होंने विद्यालय की अधिकांश जिम्मेदारियाँ विद्यार्थियों को सौंप दी हैं। विद्यालय से संबंधित निर्णयों में भी छात्रों की सहभागिता सुनिश्चित की गई है। उनका मानना है कि विद्यार्थियों के भविष्य के बारे में वे स्वयं सबसे बेहतर सोच सकते हैं। प्रधानाचार्य केवल एक मार्गदर्शक की भूमिका में शिक्षकों की टीम के साथ उनके पीछे खड़े रहते हैं।

इस प्रणाली से विद्यार्थियों के सीखने की संभावनाएँ अत्यधिक बढ़ जाती हैं और वे अपनी क्षमताओं से कहीं अधिक उपलब्धियाँ अर्जित करते हैं। उन्हें अपनी प्रतिभाओं को खुलकर व्यक्त करने एवं निखारने का अवसर प्राप्त होता है। विद्यालय के भ्रमण के दौरान हमने जो कुछ देखा, उसकी पुष्टि प्रधानाचार्य महोदय ने स्वयं की।

परंतु यह अनुभव यहीं समाप्त नहीं हुआ, हमें विद्यार्थियों द्वारा आयोजित एक सांस्कृतिक कार्यक्रम में भी सम्मिलित होने का सौभाग्य मिला। एक विशाल हॉल, जो किसी विश्वविद्यालय के ऑडिटोरियम जैसा प्रतीत हो रहा था, में जब हम पहुँचे तो मन उत्सुकता और उत्सास से भर गया।

मंच-संचालन एक छात्रा द्वारा अत्यंत आत्मविश्वासपूर्ण एवं सधे हुए अंदाज़ में किया गया। कार्यक्रम की प्रस्तुति एक अनुभवी सूत्रधार की भॉति हुई। इसके बाद विद्यालय की उपलब्धियों एवं व्यवस्थाओं से



संबंधित पीपीटी और डॉक्यूमेंट्री प्रस्तुत की गई, जिनसे यह स्पष्ट हुआ कि यह विद्यालय आँकड़ों के आधार पर भी एक विशिष्ट और गरिमामय स्थान रखता है।

इसके उपरांत भोपाल के विद्यार्थियों ने हरियाणवी अंदाज़ में गीत और नृत्य प्रस्तुत कर सबका मन मोह लिया। दोनों राज्यों के विद्यार्थियों को एक साथ बैठकर आपसी संवाद का अवसर प्रदान किया गया, जिसमें उन्होंने अपनी-अपनी संस्कृति का आदान-प्रदान किया। यह दृश्य देख कर हम सभी को लगा कि सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम का मूल उद्देश्य पूर्णतः सफल हो रहा है।

हरियाणा के छात्र-छात्राओं ने भी अपनी प्रस्तुतियों अत्यंत उत्साह एवं आत्मविश्वास के साथ दीं। कार्यक्रम में उपस्थित माननीय जॉर्डेंट डायरेक्टर श्री अतुल दनायक, जिला शिक्षा अधिकारी श्रीमती अंजनी कुमार त्रिपाठी एवं प्रधानाचार्य श्री सुधाकर पाराशर जी ने हमारे विद्यार्थियों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग द्वारा भेजी गई एस्कॉर्ट शिक्षकों की टीम भी प्रस्तुति में पीछे नहीं रही।

आदरणीय प्रधानाचार्या श्रीमती मनदीप कौर जी ने महिला सशक्तीकरण विषय पर एक प्रभावशाली प्रस्तुति दी और सभी उपस्थितों को उसमें सम्मिलित कर वातावरण को ऊर्जावान बना दिया। ललित कला प्राध्यापिका श्रीमती दीपा जी ने अपनी हस्तनिर्मित पेंटिंग माननीय अतिथियों को भेंट कीं। संस्कृत प्राध्यापक श्री सतीश साहू जी ने हरियाणा एवं भोपाल की संस्कृति पर सारगर्भित एवं तथ्यपरक विचार प्रस्तुत किए। ललित कला प्राध्यापक श्री संदीप कुमार जी ने बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ विषय पर रचित अपनी हरियाणवी रागनी से सभी को भावविभोर कर दिया। श्रीमती सुनीता दुल जी ने सूत्रधारिका के रूप में उत्कृष्ट भूमिका निभाई।

निश्चित रूप से सुभाष उत्कृष्ट विद्यालय, भोपाल में बिताए गए ये कुछ घंटे इस सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के उद्देश्यों को पूर्णतः सार्थक कर गए।

पीजीटी ललित कला
राआसंवमा विद्यालय नलवा
जिला- हिसार, हरियाणा





संघर्ष, सहभागिता एवं सफलता की गाथा है बलाना विद्यालय की परिवर्तन यात्रा



सुदेश रानी



जहाँ की मिट्टी में बसी विशिष्ट गंध-

हर ग्राम की माटी अपने अंतर में एक विशिष्ट गंध समेटे रहती है- संघर्ष की, समर्पण की, और सतत परिवर्तन की। अंबाला जिले के एक छोटे से ग्राम, बलाना की भूमि भी एक ऐसी ही अनुपम गाथा की साक्षी है, जहाँ शिक्षा के प्रति लोगों की अदम्य लगन, दृढ़ इच्छाशक्ति और सामाजिक समन्वय ने मिलकर असंभव को संभव बना दिया। यहाँ स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, बलाना, केवल एक शिक्षण संस्था नहीं, अपितु यह ग्राम्य चेतना, जनसहभागिता और नेतृत्व की शक्ति का जीवंत उदाहरण है। यह विद्यालय हमें यह स्मरण कराता है कि यदि समाज, शासन और शिक्षाजगत एकत्र होकर प्रयत्नशील हों, तो परिवर्तन केवल एक स्वप्न नहीं, एक साकार यथार्थ बन जाता है।

इतिहास का स्वरूप: बीज से महावृक्ष तक की यात्रा-

इस विद्यालय की स्थापना वर्ष 1930 में एक प्राथमिक पाठशाला के रूप में हुई थी। प्रारंभिक अवस्था में संसाधनों की अत्यंत न्यूनता थी, किंतु क्षेत्रवासियों के नेत्रों में स्वप्न असीम थे। समय के प्रवाह में यह विद्यालय विकसित होता गया। सन 1960 में इसे उच्च विद्यालय का दर्जा प्राप्त हुआ और 1991 में इसे वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के रूप में मान्यता मिली। अंबाला-हिंसार राजमार्ग पर, अंबाला



शहर से लगभग सात किलोमीटर की दूरी पर स्थित यह विद्यालय, प्रकृति की गोद में, खेतों और खुली वायु के मध्य अवस्थित है। यह स्थान न केवल शैक्षणिक दृष्टि से उपयुक्त है, अपितु मानसिक और नैतिक उन्नयन के लिए भी अत्यंत प्रेरणास्पद वातावरण प्रदान करता है।

प्रेरणादायी पूर्व छात्र : जिनकी उपलब्धियाँ बनीं मिसाल-

अपने दीर्घकालिक इतिहास में इस विद्यालय ने सहस्रों विद्यार्थियों को जीवन की दिशा प्रदान की है। इस संस्था से शिक्षा प्राप्त करने वाले कई पूर्व छात्र आज समाज के विविध क्षेत्रों में प्रतिष्ठित स्थानों पर कार्यरत हैं। श्री बलदेव सिंह बीएसएनएल में सहायक अभियंता (एसडीओ) पद से सेवानिवृत्त हुए। श्रीमती सुखविंदर कौर एवं श्री स्वर्ण सिंह शिक्षा विभाग में हिंदी प्रवक्ता के

रूप में कार्यरत हैं। श्री पवन कुमार वर्तमान में राजकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापक के रूप में निष्ठापूर्वक सेवारत हैं। ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जो आज के विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं और यह सिद्ध करते हैं कि यह विद्यालय केवल ज्ञान का केन्द्र नहीं, अपितु व्यक्तित्व निर्माण की एक प्रयोगशाला है।

विगत चुनौतियाँ : जब हर वर्ष डूब जाता था भविष्य का सपना-

यद्यपि यह विद्यालय अनेक उपलब्धियों का धनी रहा है, परंतु इसकी यात्रा सदैव सहज नहीं रही। दीर्घकाल तक यह संस्था गंभीर बुनियादी समस्याओं से जूझती रही। विद्यालय की भौगोलिक स्थिति राजमार्ग की अपेक्षा नीची होने के कारण प्रतिवर्ष वर्षा ऋतु में जलभराव की गंभीर समस्या उत्पन्न होती थी। कभी-कभी यह स्थिति दो मास





तक बनी रहती, जिससे शिक्षण गतिविधियाँ पूर्णतः बाधित हो जातीं। विद्यार्थियों को समीपवर्ती प्राथमिक विद्यालय में स्थानांतरित कर कक्षाएँ संचालित करनी पड़ती थीं, जहाँ सीमित कक्षा संख्या के कारण शिक्षण गुणवत्ता भी प्रभावित होती थी। प्रातःकालीन सभा, खेलकूद, सांस्कृतिक गतिविधियाँ सभी ठप्प हो जाती थीं। विद्यालय की चारदीवारी टूटी हुई थी, भवन जर्जर हो चुका था, और उद्यान के पौधे जलभराव के कारण गल जाते थे। इन परिस्थितियों में निराशा व्याप्त होना स्वाभाविक था, किंतु बलाना की धरती ने पराजय स्वीकार नहीं की।

परिवर्तन की पहलकदमी: जब नेतृत्व में जागरूकता हो-

वर्ष 2022 की 3 सितम्बर को विद्यालय को एक सशक्त नेतृत्व मिला- प्रधानाचार्या श्रीमती कँवलजीत कौर के रूप में। उनके आगमन के साथ ही विद्यालय में नवचेतना का संचार हुआ। उन्होंने विद्यालय की वस्तुस्थिति का गहन निरीक्षण किया और बिना विलंब के सुधार की दिशा में प्रयास आरंभ कर दिए। अगले ही दिन विद्यालय प्रबंधन समिति (एसएमसी) तथा पंचायत प्रतिनिधियों की एक बैठक आयोजित की गई। तत्पश्चात् 5 सितम्बर को ग्राम के गणमान्य व्यक्तियों, नंबरदारों, समाजसेवियों, शिक्षकों एवं अभिभावकों की एक सभा का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यालय की दयनीय स्थिति को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया। इस सभा में उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति ने परिवर्तन हेतु संकल्प लिया। यह कोई प्रशासकीय निर्णय मात्र नहीं था, यह जनभागीदारी से जन्मा एक सशक्त जनांदोलन था।

सामूहिक संकल्प : जब पूरा ग्राम बना परिवर्तन का सहभागी-

बलाना ग्रामवासियों ने यह सिद्ध कर दिखाया कि जहाँ सामूहिक संकल्प होता है, वहाँ किसी भी प्रकार की बाधा स्थायी नहीं रह सकती। आज विद्यालय का परिसर पूर्णतः सुरक्षित, सुव्यवस्थित और सौंदर्यपूर्ण बन चुका है। ग्राम पंचायत ने जलनिकासी की समस्या के स्थायी समाधान हेतु विद्युत चालित जलपंप स्थापित कराया। ग्राम के नंबरदारों ने अपने स्तर पर मिट्टी के टिपर दान दिए, जिससे विद्यालय मैदान की ऊँचाई में सुधार हुआ। भूषण ऑयल एंड फ़ैट्स प्राइवेट लिमिटेड के श्री शशि भूषण एवं श्री अनिल भूषण ने विद्यालय को आठ ट्रक मिट्टी तथा आठ आधुनिक सीसीटीवी कैमरे भेंटस्वरूप प्रदान किए। प्रधानाचार्या एवं शिक्षकों ने भी व्यक्तिगत आर्थिक सहयोग से दो अतिरिक्त कैमरे विद्यालय में स्थापित कराए, जिससे परिसर की निगरानी सुनिश्चित हो सके।

आज बलाना का यह विद्यालय एक नवीन स्वरूप में उभरकर सामने आया है। इसकी कहानी केवल एक भवन या परिसर के सुधारने की नहीं है, अपितु यह उस चेतना की कथा है, जो नेतृत्व, सहभागिता और सेवा-भाव से जन्म लेती है। यह परिवर्तन केवल ईंट और गारे का



नहीं, बल्कि विश्वास और संकल्प का निर्माण है।

बलाना की यह परिवर्तन यात्रा संपूर्ण हरियाणा प्रदेश के लिए एक प्रेरणास्रोत है। यह संदेश देती है कि जब जन-चेतना जागृत होती है, तब परिस्थितियाँ बाधक नहीं बनतीं, अपितु साधक बन जाती हैं। यह विद्यालय अब शिक्षा का केन्द्र ही नहीं, एक जीवंत प्रेरणा बन चुका है -यह दर्शाने वाला कि जहाँ इच्छा है, वहाँ अवश्य ही मार्ग है।

सुविधाओं की शृंखला: एक आधुनिक विद्यालय की ओर अग्रसर-

विद्यालय की प्रगति केवल विचारों या योजनाओं

पर निर्भर नहीं करती, अपितु उसकी वास्तविक उन्नति तभी संभव है जब सुविधाओं का सुनियोजित सृजन हो। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, बलाना ने यह सिद्ध कर दिखाया कि जब ग्रामसभा, शिक्षण संस्था एवं सामाजिक संगठन एक साथ कदम बढ़ाते हैं, तब शिक्षा का मंदिर आधुनिकता की ओर गतिशील हो उठता है। विद्यालय में शैक्षणिक वातावरण को सुगम और सौंदर्यपूर्ण बनाने हेतु विविध भौतिक परिवर्तनों की प्रक्रिया अत्यंत संगठित ढंग से सम्पन्न हुई।

विद्यालय के प्रवेश द्वार से लेकर कक्षाओं तक की पथसज्जा (टाइलिंग) पूर्व सरपंच श्री लाभ सिंह जी के मार्गदर्शन में पूर्ण करवाई गई, जिसकी प्रशंसा करते हुए





डिप्टी जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी द्वारा श्री लाभ सिंह तथा विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती कंचनजीत कौर को विद्यालय विकास में विशेष योगदान हेतु सम्मानित किया गया। इसी क्रम में विद्यालय के पार्किंग स्थल एवं प्रवेशद्वार की टाइलिंग ग्राम पंचायत बलाना द्वारा, वर्तमान सरपंच श्रीमती सुमन देसवाल जी के नेतृत्व में सम्पन्न करवाई गई, जिससे विद्यालय का सम्पूर्ण वातावरण सुव्यवस्थित एवं आकर्षक रूप धारण कर सका।

छात्रों के स्वास्थ्य की दृष्टि से शुद्ध जल की उपलब्धता अनिवार्य है। इस दिशा में डायमंड रोटरी

क्लब, जिला परिषद् अंबाला, श्री प्रीतपाल सिंह, स्थानीय कीटनाशक निर्माण इकाइयों तथा अन्य उदार संगठनों ने सहयोग प्रदान करते हुए विद्यालय को कुल चार वॉटर कूलर भेंट किए। इन उपकरणों ने विद्यालय परिसर में स्वच्छ एवं शीतल पेयजल की व्यवस्था को सुनिश्चित किया है।

विद्यालय भवन की संरचना भी समयानुसार सुदृढ़ की गई है। शिक्षा विभाग से प्राप्त अनुदान से चारदीवारी को ऊँचा कर उसे सुरक्षित बनाया गया, साथ ही प्रधानाचार्या के अथक प्रयासों से दो विज्ञान प्रयोगशालाएँ,

एक पुस्तकालय कक्ष तथा तीन नवीन कक्षाओं की स्वीकृति प्राप्त हुई। ये समस्त प्रावधान विद्यालय को एक पूर्ण एवं प्रगतिशील शैक्षणिक केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठित करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम हैं।

विद्यालय केवल भौतिक विकास तक ही सीमित नहीं रहा, अपितु उसकी आत्मा में सांस्कृतिक चेतना का संचार भी निरन्तर होता रहा है। विद्यालय के मुख्य द्वार पर विद्यादायिनी माँ सरस्वती की एक सुंदर प्रतिमा की स्थापना की गई है, जिससे परिसर में दिव्यता, शांति एवं आध्यात्मिक ऊर्जा का अनुभव होता है। यह मात्र प्रतिमा नहीं, अपितु ज्ञान के प्रति श्रद्धा और संस्कारों के प्रति निष्ठा का प्रतीक बन चुकी है।

प्रकृति के साथ शिक्षा: हरियाली की ओर उन्मुख दृष्टिकोण-

बलाना विद्यालय ने यह मान्यता स्थापित की है कि शिक्षा केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित नहीं होनी चाहिए, अपितु उसका विस्तार प्रकृति, पर्यावरण और जीवन मूल्यों तक होना चाहिए। इसी भावना के अनुरूप विद्यालय परिसर में लगभग 1500 पौधों का रोपण किया गया, जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी ने अपने नाम का एक पौधा लगाया। यह प्रक्रिया केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि एक नैतिक दायित्व का निर्वहन था, जो छात्रों में प्रकृति प्रेम और संरक्षण की चेतना का निर्माण करता है।

विद्यालय परिसर में एक हर्बल वाटिका की स्थापना की गई है, जिसमें तुलसी, आँवला, अश्वगंधा, सहजन, एवं एलोवेरा जैसे औषधीय पौधों का रोपण किया गया है। साथ ही एक रसोई बगीची (किचन गार्डन) भी विकसित





की गई है, जहाँ विभिन्न सब्जियाँ उगाई जाती हैं, जिनका उपयोग विद्यालय के मध्याह्न भोजन (मिड-डे मील) में किया जाता है। यह पहल न केवल पौष्टिक भोजन की दिशा में सहायक है, अपितु छात्रों में श्रम, आत्मनिर्भरता एवं स्वच्छ आहार के प्रति रुचि को भी प्रोत्साहित करती है।

हरियाणा उदय: जब पर्यावरण चेतना बनी जन-आंदोलन-

विद्यालय के पर्यावरणीय प्रयास राज्य स्तर की योजनाओं से भी सुसंगत रहे हैं। 10 नवम्बर 2023 को बलाना विद्यालय को गौरवशाली अवसर प्राप्त हुआ, जब हरियाणा राज्य की महत्वाकांक्षी परियोजना हरियाणा उदय के अंतर्गत जिला स्तरीय पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन विद्यालय प्रांगण में सम्पन्न हुआ। इस भव्य आयोजन की अध्यक्षता नगराधीश श्री विश्वजीत सिंह जी एवं जिला शिक्षा अधिकारी श्री सुरेश कुमार जी ने की। कार्यक्रम में र्वंड शिक्षा अधिकारी श्री सतबीर सिंह, स्वास्थ्य विभाग से डॉ. सुरभि, सरपंच श्रीमती सुमन देसवाल, पंचायत प्रतिनिधि, विद्यालय प्रबंधन समिति की प्रधान सहित आस-पास के पाँच ग्रामों के लगभग 180 गणमान्य नागरिक एवं 350 छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे।

विद्यालय की प्रधानाचार्या ने समस्त अतिथियों का स्वागत प्रतीकरूपरूप एक-एक पौधा भेंट कर किया। यह एक ऐसा संदेश था, जो विद्यालय की हरियाली, स्थायित्व एवं समर्पण की भावना को प्रकट करता है। इस अवसर पर नगराधीश महोदय ने विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण, अंगदान महत्त्व तथा नशामुक्त समाज की दिशा



में अपने कर्तव्यों के निर्वहन हेतु प्रेरित किया। जिला शिक्षा अधिकारी श्री सुरेश कुमार जी ने 'एक व्यक्ति, एक पौधा' संकल्प को सराहते हुए विद्यालय की भूमिका की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। स्वास्थ्य विशेषज्ञ डॉ. सुरभि ने संतुलित आहार, हीमोग्लोबिन जाँच और निरोग जीवनशैली पर सारगर्भित व्याख्यान दिया।

इस अवसर पर एक निःशुल्क नेत्र परीक्षण एवं हीमोग्लोबिन परीक्षण शिविर का भी आयोजन किया गया, जिससे छात्र-छात्राओं को स्वास्थ्य के प्रति सजगता का संदेश मिला। साथ ही बच्चों द्वारा स्वयं निर्मित वस्तुओं

में विविध व्यंजनों के स्टॉल से युक्त दिवाली मेला भी आयोजित किया गया, जिसे उपस्थित अधिकारियों ने उत्साहपूर्वक देखा और विद्यार्थियों के प्रयासों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

यह आयोजन केवल एक पौधारोपण कार्यक्रम नहीं, अपितु सामाजिक चेतना, स्वास्थ्य, पर्यावरण और सांस्कृतिक जीवन का एक सजीव उत्सव था। इसने बलाना विद्यालय को एक बार पुनः परिवर्तन की अग्रिम पंक्ति में प्रतिष्ठित कर दिया, जहाँ शिक्षा केवल विषयों तक सीमित नहीं, अपितु जीवन-मूल्यों की पूर्णता का प्रतीक बन गई।





विद्यालय बना सर्वांगीण विकास का केंद्र-

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बलाना की पहचान आज केवल एक शिक्षण संस्थान के रूप में नहीं, बल्कि एक ऐसे जीवंत परिसर के रूप में स्थापित हो चुकी है जहाँ प्रकृति, परंपरा, अनुशासन और नवाचार का अद्भुत समन्वय दृष्टिगोचर होता है।

विद्यालय का इको क्लब पर्यावरण संरक्षण की दिशा में न केवल सक्रिय भूमिका निभा रहा है, बल्कि जिले भर में अपनी विशिष्ट पहचान भी बना चुका है। अंबाला जिले में आयोजित पर्यावरण मेले में विद्यालय के इको क्लब को स्टॉल लगाने का अवसर मिला, जहाँ स्वयं माननीय शिक्षा मंत्री की उपस्थिति में क्लब की गतिविधियों की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई।

विद्यालय के रसोई बगीचे (किचन गार्डन) को मीडिया द्वारा डॉक्यूमेंट्री के रूप में फिल्माया गया, जिसकी प्रशंसा स्वयं जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी श्री सुधीर कालड़ा जी ने की और विद्यालय की प्रधानाचार्या को इस अभिनव प्रयास हेतु सम्मानित किया गया।

विद्यालय में खेलों और अनुशासन को विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का आधार माना गया है। परिसर में वॉलीबॉल और बैडमिंटन कोर्ट का निर्माण किया गया है, जिससे छात्रों को खेलों में प्रतिभा निखारने का अवसर मिल रहा है। विद्यालय के छात्र राज्य स्तर की खेल प्रतियोगिताओं में भाग लेकर सफलता प्राप्त कर रहे हैं। साथ ही विद्यालय की एनसीसी इकाई निरंतर सक्रिय है, जिसके कैडेट्स जिला व राज्य स्तर के कैंपों में भाग लेकर अनुशासन, नेतृत्व और राष्ट्रसेवा का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं। 26 जनवरी, 2024 को जिला स्तर पर आयोजित डॉकी में विद्यालय के एनसीसी

छात्रों की सशक्त भागीदारी रही, जो गौरव का विषय है।

शैक्षणिक दृष्टि से भी विद्यालय ने उत्कृष्ट प्रगति की है। गत सत्र में विद्यालय का परीक्षा परिणाम 100% रहा, जो अध्यापकों की प्रतिबद्धता और विद्यार्थियों की मेहनत का प्रमाण है। नामांकन में निरंतर वृद्धि हुई है वर्ष 2023 में जहाँ यह संख्या 336 थी, वहीं वर्तमान में यह बढ़कर लगभग 500 हो चुकी है। छात्रों ने बुनियादी, एनएमएएमएस जैसी विभिन्न प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं में भाग लिया और सफलता अर्जित की। शिक्षकों द्वारा छात्रों को न केवल अकादमिक सहयोग, बल्कि तकनीकी और नैतिक समर्थन भी दिया जा रहा है, जिससे विद्यार्थियों में आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता का संचार हो रहा है।

सांस्कृतिक गतिविधियों के क्षेत्र में भी विद्यालय अग्रणी भूमिका निभा रहा है। भाषण, कविता, समूह गीत, लोकनृत्य आदि की नियमित प्रतियोगिताओं से छात्रों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और मंच संचालन का अवसर प्राप्त होता है। ये गतिविधियाँ न केवल छात्रों में नेतृत्व क्षमता विकसित करती हैं, बल्कि उनमें सामाजिकता, समरसता और आत्मविश्वास का भी बीजारोपण करती हैं। वार्षिकोत्सव, शिक्षक दिवस, बाल दिवस जैसे आयोजनों में गाँव का समुदाय भी पूर्ण उत्साह से सम्मिलित होता है, जिससे विद्यालय और समाज के बीच की दूरी मिटती है और एक समरस वातावरण बनता है।

सामाजिक सरोकारों की दिशा में विद्यालय निरंतर अग्रसर है। प्रधानाचार्या के निर्देशन में नशा मुक्ति रैली का आयोजन किया गया, जिसमें गाँव की सरपंच श्रीमती सुमन रानी, पंचायत सदस्य श्री तलविंदर सिंह एवं अन्य गणमान्यजन ने सहभागिता की। छात्रों ने शिक्षकों के साथ मिलकर गाँव-गाँव जाकर नशे के दुष्परिणामों से

जनसामान्य को अवगत कराया। इस रैली ने न केवल विद्यार्थियों को सामाजिक चेतना से ओतप्रोत किया, बल्कि यह भी सिद्ध किया कि आज की पीढ़ी न केवल शिक्षित है, बल्कि समाज को जागरूक करने में भी सक्षम है।

विद्यालय को सत्र 2023-24 और 2024-25 में उत्कृष्ट कार्यों के लिए अनेक पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हुए हैं। 15 अगस्त, 2024 को प्रधानाचार्या को जिला प्रशासन द्वारा सम्मानित किया गया, जो विद्यालय परिवार के सामूहिक प्रयासों का परिणाम है। ग्राम पंचायत बलाना ने भी विद्यालय के उत्थान में निरंतर योगदान देने के लिए प्रधानाचार्या को सम्मानित किया। विद्यालय को खंड स्तर पर 'वरिष्ठ राजकीय विद्यालयों में प्रथम स्थान' का पुरस्कार प्राप्त हुआ, जो यह दर्शाता है कि किस प्रकार सीमित संसाधनों के बीच, दूरदर्शिता और समर्पण से विद्यालय को एक उत्कृष्ट स्वरूप प्रदान किया जा सकता है।

प्रधानाचार्या श्रीमती कौवलजीत कौर की व्यक्तिगत उपलब्धियाँ भी प्रेरणास्पद हैं। उन्हें गणतंत्र दिवस पर उपायुक्त नारायणगढ़ द्वारा सम्मानित किया गया। जिला शिक्षा अधिकारी, अंबाला तथा शहजहादपुर विद्यालय प्रबंधन समिति द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए गए। उन्हें इंडियन बेस्टियन अवार्ड तथा इंटरनेशनल वीमन अवार्ड से भी सम्मानित किया गया, जो नारी नेतृत्व की सशक्त उपस्थिति का प्रमाण है।

विद्यालय को 100% बोर्ड परीक्षा परिणाम, मतदान जागरूकता, पुलिस सहयोग, एनएसएस शिविर और स्काउट-गाइड कार्यक्रमों में सक्रिय सहभागिता के लिए विभिन्न स्तरों पर प्रशस्तियाँ प्राप्त हुई हैं। ये समस्त उपलब्धियाँ इस तथ्य को रेखांकित करती हैं कि बलाना विद्यालय केवल ज्ञान के दीपक ही नहीं जला रहा, बल्कि सामाजिक चेतना, पर्यावरण संरक्षण, सांस्कृतिक समृद्धि और राष्ट्रभक्ति की ज्योति भी प्रज्वलित कर रहा है।

प्रेरणा की एक जीवंत मिसाल-

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बलाना की यह परिवर्तन यात्रा यह सिद्ध करती है कि यदि नेतृत्व प्रेरणादायी हो, समुदाय सहभागी हो और शिक्षकगण पूर्ण समर्पण से कार्य करें तो शिक्षा केवल पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं रहती, बल्कि समाज का पुनर्निर्माण भी करती है। बलाना का यह विद्यालय आज एक आदर्श मॉडल बन चुका है, जहाँ शिक्षा के साथ संस्कृति, अनुशासन, सेवा, और संवेदना का सुंदर समावेश है। यह केवल एक विद्यालय नहीं, बल्कि एक प्रेरणा है, वर्तमान और भविष्य के लिए।

हिंदी अध्यापिका
राजकीय माध्यमिक विद्यालय
सेक्टर-25, पंचकूला, हरियाणा





निष्काम कर्मयोगी हैं यशपाल आर्य

विद्यालय तथा समाज परस्पर पूरक होते हैं। एक ओर जहाँ सरकारी स्कूलों में शिक्षकों पर अपना दायित्व ईमानदारी से न निभाने की घटनाएँ सामने आती रहती हैं, वहीं लगभग सभी स्कूलों में कुछ ऐसे शिक्षक भी होते हैं, जो लीक से हटकर कार्य करते रहते हैं। ऐसे निष्काम कर्मयोगी विद्यालय तथा समाज दोनों के लिए किसी प्रेरणा से कम नहीं होते। रेवाड़ी जिले के गाँव सीहा स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में अंग्रेजी के प्राध्यापक के तौर पर सेवारत यशपाल सिंह यादव एक ऐसे ही निष्काम कर्मयोगी हैं, जिनकी सारी गर्मियों तथा सर्दियों की छुट्टियाँ विद्यालय में ही बीतती हैं। आसपास के क्षेत्र में यशपाल आर्य के नाम से प्रसिद्ध तथा सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में चर्चित श्री यादव ने इलाके के पाँच दर्जन से ज्यादा गाँव के इतिहास लेखन का गंभीर शोधपरक कार्य भी किया है।



इन दिनों भीषण ठंड में सीहा के इस सरकारी स्कूल में मिड-डे मील कक्ष, चारदीवारी, टॉयलेट्स के निर्माण के अलावा बोरिंग का कार्य चल रहा है। इतना ही नहीं, खंड स्तर पर सीएम ब्यूटीफिकेशन प्रतियोगिता में विजेता रहे इस विद्यालय के लंबे-चौड़े मनोहारी लॉन व परिसर की संरक्षण एवं संवर्धन की भी आवश्यकता रहती है। श्री आर्य के योगदान एवं समर्पण का अंदाजा इस पहलू से लगाया जा सकता है कि इन सभी कार्यों के अलावा विद्यालय की दैनिक डाक, आउट ऑफ स्कूल व ड्राप आउट्स बच्चों के सर्वे जैसे राष्ट्रीय दायित्व के कार्यों को भी इन छुट्टियों में स्वयं ही संभाल रहे हैं।

भले ही उनके संस्कारों से प्रेरित कुछ बड़ी कक्षाओं के स्वयंसेवक कभी-कभार उनके दैनिक दायित्वों में हाथ बँटा जाते हैं, किंतु वे एक माह की ग्रीष्मकालीन अवकाश तथा 15 दिन की शरद अवकाश के दौरान भी नियमित रूप से विद्यालय आते हैं। दिलचस्प पहलू यह है कि पूरे साल में भी वे न के बराबर छुट्टी लेते हैं। विद्यालय की खेल नर्सरी के संरक्षण की बात हो, या फिर विद्यालय की तमाम ग्रांट्स के सदुपयोग की साधना हो, सामाजिक कार्यकर्ताओं से संपर्क की जरूरत हो, या फिर स्कूल प्रबंधन समिति के संयोजक होने के नाते समिति तथा सभी अभिभावकों से तालमेल रखने की रचनात्मक पहल हो, विद्यालय के मासिक प्रोत्साहन कार्यक्रमों का कुशल संयोजन व संचालन हो, या फिर राष्ट्रीय पर्वों के संपादन की जिम्मेदारी हो, वे इन सभी दायित्वों को पूरी संजीदगी एवं समर्पण से निभाते हैं। सुंदर लिखाई, ड्राफ्टिंग स्किल्स, कंप्यूटर की जानकारी, विषय पर पकड़ के अलावा विद्यालय व छात्र हित में दान देने में सदा आगे रहते हैं। इन सब कार्यों की एवज में वे कभी कुछ अतिरिक्त अपेक्षा नहीं करते, अपितु बड़ चढ़कर विद्यालय के अत्यंत अनेक प्रभार खुद ही संभालते हैं। ऐसे कर्मठ, सामाजिक अभिरंता तथा निष्काम कर्मयोगी वर्तमान भौतिकवादी तथा आपाधापी के युग में दुर्लभ हैं, जिनसे बहुत कुछ सीखा जा सकता है। अपने नैतिक दायित्वों से अक्सर पलायन करने वाले, अपने अध्यापन विषय की छिछली जानकारी रखने वाले तथा छुट्टियों पर गिद्ध दृष्टि रखने वाले वर्तमान माहौल में प्राचीन समृद्ध परंपरा के इस बहुआयामी व्यक्तित्व एवं कृतित्व के साथ काम करना अनायास सुकून दे जाता है।

-सत्यवीर नाहड़िया

प्राचार्य

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
सीहा, जिला-रेवाड़ी, हरियाणा



कला की कुंजी

मोहनलाल एक मशहूर बदर्ई थे। उनके फर्नीचर की माँग न केवल शहर में बल्कि दूर-दराज के गाँवों में भी थी। एक दिन उनका पुत्र राजू स्कूल से लौटा और बोला- पापा, मैं भी आपकी तरह बदर्ई बनना चाहता हूँ।

पिता ने मुस्कराते हुए कहा- बेटा, पहले अपनी पढ़ाई पूरी कर लो। फिर तुम जो चाहो बन सकते हो। राजू निराश हो गया। उसे लगने लगा कि उसके पिता नहीं चाहते कि वह बदर्ई बने।

अगले दिन रविवार को पिता पुत्र को अपने कारखाने ले गए। पुत्र पूरे दिन पिता के साथ हाथ बँटाता रहा और छोटे-मोटे कार्य करता रहा, जैसे लकड़ी काटना, नापना, पॉलिश करना। शाम को पिता ने पुत्र से पूछा- बेटा, आज तुमने क्या सीखा?

पुत्र ने उत्साह से उत्तर दिया- पिताजी, मैंने लकड़ी काटना, नापना सीखा...

पिता ने उसे टोकते हुए कहा- नहीं बेटा, ये सब सतही बातें हैं। असली सीख तो कुछ और है।

पुत्र हैरान था- क्या पिताजी?

पिता ने समझाया- देखो बेटा, जब हम लकड़ी काटते हैं, तो हमें गणित की जरूरत होती है। जब हम डिजाइन बनाते हैं, तो हमें कला की जरूरत होती है। जब हम ग्राहक से बात करते हैं, तो हमें भाषा की जरूरत होती है और जब हम लकड़ी के विभिन्न टुकड़ों को जोड़कर कलाकृति बनाते हैं, तो हमें विज्ञान की आवश्यकता होती है।

पुत्र की आँखें चमक उठीं- मतलब, एक अच्छा बदर्ई बनने के लिए...

पिता ने पुत्र की बात पूरी करते हुए कहा- हाँ बेटा, एक अच्छा बदर्ई बनने के लिए हमें हर विषय का ज्ञान होना चाहिए। इसीलिए मैं चाहता हूँ कि तुम पहले अच्छी तरह से पढ़ाई करो।

उस दिन पुत्र को समझ में आया कि शिक्षा किसी भी कला का आधार है, चाहे वह बदर्ई का काम हो या कुछ और। राजू ने पूरे मन से पढ़ाई की। कुछ वर्षों बाद वह न केवल एक कुशल बदर्ई बना, बल्कि सफल फर्नीचर डिजाइनर भी बना।

- देवेन्द्रराज सुथार

गांधी चौक, आतमणावास
बागरा, जिला-जालोर
राजस्थान- 343025





बाल सारथी

'बाल सारथी' आपका अपना पन्ना है। हम चाहते हैं कि इसमें आपकी रचनाओं को स्थान दिया जाए। आपने कोई मौलिक कविता, कहानी या अन्य विधा की रचना लिखी हो तो अपने अध्यापक की सहायता से हमें ई-मेल या डाक द्वारा भेजें। आपकी रचनाओं को प्रकाशित करके हमें प्रसन्नता मिलेगी।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना, अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलेंगी।

- आपकी यामिका दीदी

सामान्य ज्ञान

- » प्रश्न-1: जलियाँवाला बाग हत्याकांड में गोली चलाने का आदेश किसने दिया?
- » उत्तर: जनरल डायर ने।
- » प्रश्न-2: भारत का संविधान बनाने में कितना समय लगा?
- » उत्तर: 2 वर्ष, 11 माह और 18 दिन।
- » प्रश्न-3: भारत की पहली बोलने वाली फिल्म कौन-सी थी?
- » उत्तर: आलमआरा।
- » प्रश्न-4: महाभारत के युद्ध को किसने दिव्य दृष्टि से देखा था?
- » उत्तर: संजय ने।
- » प्रश्न-5: भारत का प्रथम समाचार-पत्र कौन-सा था और वह कब प्रकाशित हुआ?
- » उत्तर: 'बंगाल गजट', सन 1780 में (कोलकाता से)।
- » प्रश्न-6: मोर को कब राष्ट्रीय पक्षी घोषित किया गया?
- » उत्तर: 31 जनवरी, 1963 को।
- » प्रश्न-7: कोणार्क मंदिर किस भगवान को समर्पित है?
- » उत्तर: सूर्य भगवान को।
- » प्रश्न-8: विटामिन बी1 की कमी से कौन-सा रोग होता है?
- » उत्तर: बेरी-बेरी।
- » प्रश्न-9: भारत में आज़ादी के बाद पहली जनगणना कब हुई थी?
- » उत्तर: 1951 में।
- » प्रश्न-10: दिल्ली का लाल किला किसने बनवाया?
- » उत्तर: शाहजहाँ ने।

पहेली बूझो: प्राणी खोजो

1. गंदगी खाने वाला
2. पूँछ में जहर वाला
3. नाक पर सींग वाला
4. केंचुली छोड़ने वाला
5. सबसे लंबी उम्र वाला
6. बेहद तेज़ नजर वाला
7. बेहद धीमी चाल वाला
8. बरसात में टरने वाला
9. सबसे तेज़ दौड़ने वाला
10. खड़े-खड़े सो लेने वाला
11. सुबह-सुबह जगाने वाला
12. कसुए से रेस लगाने वाला
13. कायरता की उपमा वाला
14. मधुर कंठ की उपमा वाली
15. शहद इकट्ठा करने वाली

1. सूअर 2. बिच्छू 3. गेंडा 4. सोंप 5. कछुआ
6. गिद्ध 7. घोघा 8. मेंढक 9. चीता 10. घोड़ा
11. मुर्गा 12. खरगोश 13. चूहा 14. कोयल 15. मधुमक्खी

संकलन-संयोजन :

प्रधान अग्रवाल
प्राथमिक विद्यालय डहिया
फतेहगंज पश्चिमी, जिला बरेली
उत्तर प्रदेश

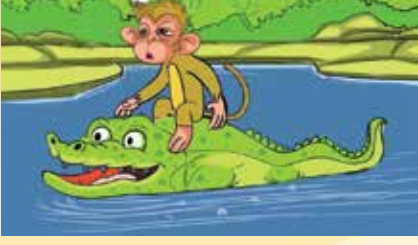
बाल पहेलियाँ

1. मूँछ मरोड़े खड़े रहे जो,
आजाद रही जिसकी बोली।
बिगाड़ जरा न पाई उनका,
अंग्रेजों की कोई गोली।
2. जयहिंद का बना नारा था,
स्वयं फौज का वो प्यारा था।
'नेता जी' नाम कहा भारत में,
बना गगन का वो तारा था।
3. हैट लगाने वाला,
था जो वीर सिपाही।
फौसी पर झूल गया,
खून बनायी स्याही।
4. क्रांति की अलख जगायी,
था वो भी वीर सिपाही।
बागी हो अंग्रेजों से,
फौसी जिसने थी पायी।
5. भारत भूमि के लाल थे,
प्रधान बड़े कमाल थे।
दुश्मन के लिए काल थे,
भारती के वे भाल थे।

- उत्तर 1.श्री चंद्रशेखर आज़ाद 2.श्री सुभाषचंद्र बोस
3.श्री भगतसिंह 4.श्री मंगल पांडे 5.श्री लाल
बहादुर शास्त्री।

गोविन्द भारद्वाज
पितृकृपा 4/254, बी-ब्लॉक
पंचशील नगर अजमेर-305004
राजस्थान





बंदर और मगरमच्छ

एक नदी किनारे एक बड़ा-सा पेड़ खड़ा था, जिस पर एक समझदार बंदर रहता था। वह बंदर रोज़ पेड़ पर लगे मीठे-मीठे फल खाता और खुश रहता।

एक दिन, एक मगरमच्छ नदी से बाहर आया और थका-हारा दिखा। बंदर ने उसे देखा और पूछा, क्या बात है, तुम उदास क्यों हो?

मगरमच्छ बोला, मैं भूखा हूँ और कई दिनों से कुछ खा

नहीं पाया हूँ।

बंदर को उस पर दया आ गई। उसने पेड़ से कुछ मीठे फल तोड़े और मगरमच्छ को खाने के लिए दे दिए। मगरमच्छ को फल बहुत स्वादिष्ट लगे। वह रोज़-रोज़ आने लगा और बंदर से दोस्ती कर ली।

एक दिन मगरमच्छ ने सोचा, मेरी पत्नी को भी ये फल खाने चाहिए। बंदर ने खुशी-खुशी और फल तोड़कर उसे दिए। मगरमच्छ की पत्नी ने जब फल खाए तो कहा, अगर फल इतने मीठे हैं, तो उस बंदर का दिल कितना मीठा होगा! मुझे उसका दिल चाहिए!

मगरमच्छ ने पहले तो मना किया, पर पत्नी के कहने पर वह बंदर को पीठ पर बैठा कर नदी में ले गया। जब वह बीच नदी में पहुँचा, तो उसने सच्चाई बताई।

बंदर समझदार था। वह बोला, अरे! मेरा दिल तो पेड़ पर ही रह गया। चलो वापस चलो, मैं लेकर आता हूँ।

मगरमच्छ ने बंदर की बात पर भरोसा किया और वापस किनारे ले आया। बंदर फुर्ती से पेड़ पर चढ़ गया और बोला, मूर्ख मगरमच्छ! क्या कोई अपना दिल बाहर रखता है?

मगरमच्छ शर्मिंदा हो गया और चुपचाप लौट गया।

प्यारे बच्चो! इस कहानी से हमें यही सीख मिलती है कि दोस्ती में कभी स्वार्थ नहीं होनी चाहिए तथा समझदारी से हम किसी भी मुसीबत से बच सकते हैं।



आओ देशभक्ति के भाव जगाएँ

आन बान और शान तिरंगा
भारत माँ की जान तिरंगा
आओ कीर्ति पताका लहराएँ

हर भारतीय का सिरमौर
विमल यश गौरव की भोर
आओ देशभक्ति के भाव जगाएँ

फौलादी हाथों के जोहर का दम
ये है आज़ादी का परचम
आओ मस्तक पर तिलक लगाएँ

चढ़ा गए निज शीश बलिदानि
लुटाई वीर बाँकुरों ने अलमस्त जवानी
आओ राष्ट्रीय गौरव गान गाएँ

वैभव इसका बढ़ता जाए
ये कभी झुकने न जाए
आओ मिलकर प्रण उठाएँ

इस पर सदा हो तन मन अर्पण
बल पौरुष निज शीश समर्पण
आओ घर-घर अलख जगाएँ

- धर्म सिंह गहली
प्रवक्ता रसायन विज्ञान
रावमा विद्यालय, जैलाफ
जिला-महेन्द्रगढ़, हरियाणा

पंचतंत्र से

जोकर खूब हँसाता

रंग-बिरंगा कपड़ा पहने,
बच्चों का वह मन बहलाए।
लंबी टोपी, मूँछ बड़ी है,
जोकर सबको खूब हँसाए।।

सूट-बूट में आता जोकर,
उल्टे-सीधे करतब करता।
गोल-मटोल नाक है दिखती,
कभी-कभी वह गिरता-उठता।।

कभी नाक पर चश्मा पहने,
तेजी से वह कान हिलाता।
जोकर कभी उछल पड़ता है,
देख उसे दर्शक मुस्काता।।

उगले धुँआ कभी वह मुख से,
एक टाँग पर जोकर चलता।
उसको देख सभी हँसते हैं,
अजब-गजब वह बातें कहता।।

बच्चों को वह प्यारा लगता,
कभी हँसाए, कभी रुलाए।
बात करे वह ऐसी-पेसी,
बच्चों का मन खुश हो जाए।।

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
मोहल्ला- बरगदवा (नई बस्ती)
निकट- गीता पब्लिक स्कूल
पोस्ट- मड़वा नगर (पुरानी बस्ती)
जिला- बस्ती 272002 (उप्र)





खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा



आदरणीय अध्यापक साथियो एवं उत्साही विद्यार्थियो! खेल-खेल में विज्ञान शृंखला के अंतर्गत कुछ नई व रुचिकर विज्ञान गतिविधियाँ आपके समक्ष प्रस्तुत हैं-



1. गेंद को रोको, जितना ज्यादा समय रोक सको!

नियंत्रण एवं समन्वय, संतुलन संबंधी गतिविधियों के अंतर्गत कक्षा के विद्यार्थी बादल ने एक नई गतिविधि का विचार प्रस्तुत किया। उसने तीन पेपर प्लेट्स को मध्य में सुराख करके तीन फीट लंबे पीवीसी पाइप पर ग्लूगन की मदद से चित्रानुसार फिट किया। तीनों पेपर प्लेट्स की सतह पर पिंग-पोंग बॉल के व्यास से थोड़ा बड़ा वृत्ताकार छेद भी किया गया। इस प्रकार यह यंत्र विद्यार्थियों के लिए एक अत्यंत मजेदार खेल उपकरण बन गया।

अब दो बच्चों के बीच इस खेल को खेला गया, जिसमें एक साथी ऊपर वाली प्लेट पर गेंद रखता था, और दूसरे साथी का कार्य होता था उस गेंद को नीचे गिरने से रोकना। खेल का नियम यह था कि पैरों और हाथों की गतिविधियाँ निरंतर बनी रहनी चाहिए। कोई भी अंग स्थिर न हो। जो विद्यार्थी इस यंत्र पर गेंद को सबसे अधिक समय तक होल्ड कर रोके रखता, वही विजेता घोषित होता।

इस खेल उपकरण की सहायता से विद्यार्थियों ने संतुलन, नियंत्रण व समन्वय का अच्छा अभ्यास किया। यह मानव मस्तिष्क की शारीरिक हलचल एवं दृष्टि के बीच समन्वय का अनूठा अभ्यास बन गया। यह खेल यंत्र विद्यार्थियों के बीच कौतूहल और आकर्षण का केंद्र बना रहा।

2. अरंडी के पौधे के बारे में गतिविधि नोट लिखकर उसे जानना

एक दिन कुछ बच्चे मेरे पास कुछ गोल-गोल, नरम काँटेदार, हरे-हरे कंचे जितने बड़े किसी पौधे के फल लेकर आए। तब ज्ञात हुआ कि कक्षा 8 के विद्यार्थियों को अरंडी के पौधे के बारे में जानने में विशेष रुचि है। तब उन्हें प्रकृति भ्रमण विज्ञान गतिविधि के अंतर्गत विद्यालय के पास स्थित अरंडी के पौधे के पास ले जाया गया, जहाँ उन्हें फल, बीज, पतियों तथा इस पौधे के औषधीय गुणों और व्यावसायिक उपयोगों की जानकारी दी गई।

इसके पश्चात् विद्यार्थियों को सभी जानकारीयों देकर उन्हें इस गतिविधि की डॉक्यूमेंटेशन के अंतर्गत एक संक्षिप्त रिपोर्ट अथवा नोट लिखना सिखाया गया, जिसका एक नमूना इस प्रकार रहा:

विषय: अरंडी के पौधे का अध्ययन

गतिविधि का नाम: प्रकृति भ्रमण के अंतर्गत अरंडी के पौधे का अवलोकन

उद्देश्य: विद्यार्थियों को अरंडी (कैस्टर) के पौधे की संरचना, उसके फल, बीज, पतियों तथा औषधीय एवं व्यावसायिक उपयोगों की जानकारी देना

स्थान: विद्यालय परिसर/निकटवर्ती प्राकृतिक क्षेत्र

गतिविधि का विवरण: हमने विज्ञान अध्यापक के साथ मिलकर अरंडी के पौधे का प्रत्यक्ष अवलोकन करते हुए उसकी विशेषताओं का अध्ययन किया

पतियाँ: बड़ी, हथेली जैसी आकार की, हरे रंग की

फल: काँटेदार छिलकों वाले, जिनमें बीज पाए जाते हैं

बीज: भूरे रंग के, चिकने और चमकदार होते हैं, जिनसे अरंडी का तेल निकाला जाता है।

औषधीय उपयोग: अरंडी के तेल का प्रयोग कब्ज दूर करने वाली औषधियों में होता है। यह त्वचा रोगों में भी लाभकारी है। इसके पत्तों पर सरसों का तेल व हल्दी पाउडर लगाकर गरम तवे पर सेंक कर चोट के कारण आई सूजन पर सूती पट्टी से बाँधने से सूजन व दर्द में आराम मिलता है

व्यावसायिक उपयोग: अरंडी का तेल साबुन, पेंट, स्थायी और जैविक इंधन बनाने में प्रयोग होता है। इसके बीजों से निकाला गया तेल उद्योगों में अत्यंत उपयोगी होता है

निष्कर्ष: इस भ्रमण द्वारा हमने अरंडी के पौधे की पहचान की, उसके बहुआयामी उपयोगों को जाना और प्रकृति से जुड़ाव महसूस किया। यह गतिविधि पर्यावरणीय व वनस्पति ज्ञान को समृद्ध करने वाली रही।





3. आखिर पिलखन के पेड़ के नीचे ये क्या बिखरा पड़ा है?

विद्यालय की प्राथमिक विंग के प्रांगण में एक विशाल पिलखन का वृक्ष स्थित है। एक दिन उसके नीचे भूरे रंग की उँगली जितनी लंबी पत्तियों का ढेर लग गया था। बच्चे आश्चर्यचकित थे कि वृक्ष तो गुलाबी-हरे रंग की पत्तियों से भरा हुआ है, फिर ये छोटी-छोटी पत्तियाँ कौन-सी हैं, जो नीचे गिरी हुई हैं? बच्चे उन्हें मुट्ठी में भरकर एक-दूसरे पर फेंकते हुए हँसी-खुशी से खेल रहे थे। मैंने पूछा- ये क्या कर रहे हो? उन्होंने जवाब दिया- हम पत्तों से होली खेल रहे हैं!

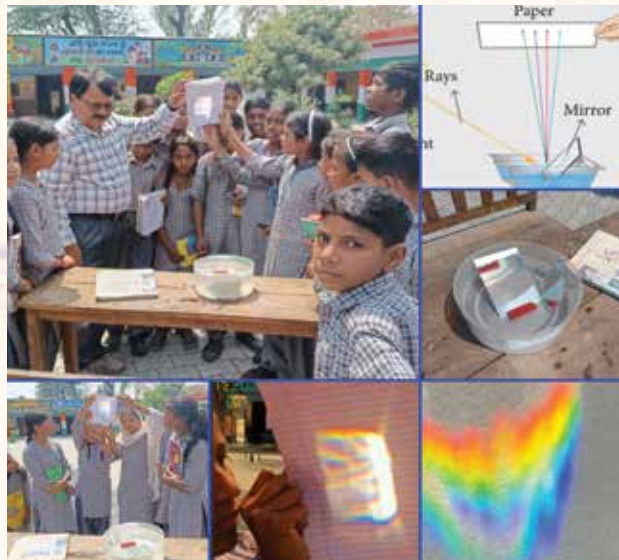
वास्तव में, पिलखन एक तेजी से बढ़ने वाला छायादार वृक्ष है जिसे ग्राम-चौपालों, बस शेल्टरों, पंचायत घरों और विद्यालय परिसरों में घनी छाया के लिए लगाया जाता है। मार्च महीने में जब इस वृक्ष में नई पत्तियाँ आती हैं, तो वे एक विशेष संरचना से ढकी होती हैं, जिसे पत्ती-आवरण या लीफ शीथ कहा जाता है। इसका मुख्य कार्य नवोदित पत्तियों की रक्षा करना होता है।

हालाँकि पिलखन की पत्तियाँ अपने तने से अच्छे से जुड़ी रहती हैं, परंतु यह मोनोकॉट पौधों (जैसे धान, घास, गेहूँ) की तरह स्पष्ट पत्ती-आवरण नहीं बनाता। पिलखन का पत्ती-आवरण शीघ्र ही सूखकर नीचे गिर जाता है। बच्चे हँसते हुए बोले- तो हम समझे कि ये नई पत्तियों के कपड़े हैं! और वे फिर उसी उत्साह से खेलने लग पड़े।

4. इतना बड़ा सनलाइट स्पेक्ट्रम बनाया, कमाल है!

सूर्य का प्रकाश सात रंगों से मिलकर बना होता है, जिसे हम प्रिज्म की सहायता से स्पेक्ट्रम के रूप में देख सकते हैं। लेकिन विद्यार्थियों को बिना प्रिज्म के ही स्पेक्ट्रम बनाकर दिखाने के लिए एक समतल दर्पण का उपयोग किया गया।

एक प्लास्टिक के टब में पानी भरकर उसमें दर्पण को तिरखा रखा गया। फिर दर्पण



को सूर्य की दिशा में घुमाया गया। सूर्य की किरणें पानी में होकर जब दर्पण से टकराईं, तब प्रकाश का विक्षेपण हुआ और सात रंगों का स्पेक्ट्रम बन गया।

विद्यार्थियों ने अपनी-अपनी नोटबुक को स्क्रीन बनाकर इस स्पेक्ट्रम को उसमें प्रतिबिंबित होते देखा। सबके चेहरों पर उत्साह था। उन्होंने सीखा कि यह एक ऐसा तरीका है जिससे बिना प्रिज्म के भी बड़ा स्पेक्ट्रम प्राप्त किया जा सकता है। समतल दर्पण और पानी मिलकर प्रिज्म के जैसे कार्य करते हैं। यह बच्चों के लिए एक चमत्कारी अनुभव था।

5. कम से कम बल लगाकर आलू में प्लास्टिक स्ट्रॉ इंसर्ट करना

इस विज्ञान गतिविधि के माध्यम से बच्चों को अदृश्य वायु-दाब की शक्ति को समझने का अवसर मिला। हमने किया यह कि एक प्लास्टिक के स्ट्रॉ को बीच से पकड़कर उसे आलू में लंबवत् मारा, लेकिन वह आलू में नहीं घुसा। दूसरे प्रयास में उसी स्ट्रॉ के ऊपरी सिरे को अँगूठे से बंद करके उसे आलू में मारा गया। अब वह कम बल से भी आलू में आसानी से घुस गया।

इसका कारण यह है कि पहले प्रयास में स्ट्रॉ का सिरा खुला था, जिससे उसमें मौजूद हवा बाहर निकल गई और स्ट्रॉ मुड़ गया या दब गया। लेकिन जब स्ट्रॉ के ऊपर अँगूठा रखकर उसे बंद किया गया, तो हवा बाहर नहीं निकल सकी। इससे स्ट्रॉ के अंदर वायु-दाब बन गया, जिससे स्ट्रॉ कठोर हो गई और आसानी से आलू में प्रवेश कर गई।



इस गतिविधि से विद्यार्थियों को ज्ञात हुआ कि हवा का अदृश्य बल अत्यंत प्रभावशाली होता है।

तो आदरणीय अध्यापक साथियो व प्रिय विद्यार्थियो! आगामी अंक में फिर मिलेंगे कुछ और मजेदार विज्ञान गतिविधियों के साथ। आशा है आप उन्हें भी पसंद करेंगे और स्वयं करके देखेंगे।

दर्शन लाल बवेजा

साइंस मास्टर / ईएसएचएम

पीएम श्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, दामला

खंड-जगाधरी, यमुनानगर, हरियाणा





मम्मी की रसोई, मेरी प्रयोगशाला



डॉ. मोनिका शर्मा



प्यारे बच्चो! क्या आपने कभी गौर से देखा है कि जब मम्मी रसोई में काम करती हैं, तो वहाँ कुछ न कुछ बदलता रहता है? दूध उबलता है, सब्जियाँ पकती हैं, रोटी फूलती है, और मीठे पकवानों से घर महक उठता है। ये सब सिर्फ खाना पकाने की बातें नहीं हैं, ये हैं विज्ञान के छोटे-छोटे

चमत्कार! अगर आप ध्यान से देखें, तो रसोई किसी प्रयोगशाला से कम नहीं लगती, फर्क सिर्फ इतना है कि वहाँ वैज्ञानिक के सफेद कोट की जगह मम्मी की साड़ी होती है और टेस्ट ट्यूब की जगह बर्तन। जब अगली बार मम्मी रसोई में कुछ पकाएँ, तो जरा ध्यान देना:

रोटी कब फूलती है?

सब्जियाँ पकाने पर नरम क्यों हो जाती हैं?

तड़के से सुगंध क्यों आती है?

उबलते आलू का रंग और बनावट कैसे बदलती है?

हर एक क्रिया में विज्ञान की झलक है। जब आप रसोई को एक प्रयोगशाला की तरह देखना शुरू करोगे, तो आपको रसायन विज्ञान और जीवन के बीच का रिश्ता समझ में आने लगेगा।

क्या होता है रासायनिक परिवर्तन ? - इन सभी उदाहरणों में एक चीज़ समान है। खाना पकाने के दौरान उसमें मॉलिक्यूल्स (अणु) का ढाँचा बदल जाता है। वह चीज़ अब पहले जैसी नहीं रह जाती। यानी बदलाव स्थायी होता है। उदाहरण के लिए एक

बार प्याज़ भुन जाए, तो वह वापस कच्चा नहीं बन सकता। यही है रासायनिक परिवर्तन की पहचान।

गर्मी और रासायनिक परिवर्तन- जब भी हम किसी चीज़ को गर्म करते हैं, खासकर खाना बनाते समय, तो उसमें कई रासायनिक परिवर्तन होते हैं। यानी पदार्थ की बनावट इतनी बदल जाती है कि वह पहले जैसा नहीं रह जाता। और ये बदलाव स्थायी होते हैं, इन्हें वापस नहीं बदला जा सकता। चलिए, अब कुछ मजेदार उदाहरणों से इसे समझते हैं-

1. सब्जियों का पकना- जब हम सब्जियों को पकाते हैं, तो उनका रंग बदल जाता है, वे नरम हो जाती हैं, और उनका स्वाद भी अलग हो जाता है। ये सब इसलिए होता है क्योंकि गर्मी से उनमें मौजूद स्टार्च टूटता है और नई बनावट बनती है।

2. आलू पकाने का जादू- आलू में बहुत सारा स्टार्च होता है। जब हम उसे पानी में उबालते हैं, तो स्टार्च पानी सोखकर फूल जाता है। इस प्रक्रिया को जेलैटिनाइजेशन (Gelatinization) कहा जाता है। पकने के बाद, वही सख्त आलू एकदम मुलायम और स्वादिष्ट बन जाता है।

3. चावल का फूला-फूला बनना- चावल पकाने के समय वह गर्म पानी सोख लेता है और उसकी बनावट बदल जाती है। कच्चा चावल सख्त और सफेद होता है, लेकिन पकने के बाद वह नरम, मुलायम और फूला हुआ हो जाता है। यह भी एक स्थायी परिवर्तन है।

4. रोटी का फूलना- जब आटे की लोई को तवे पर रखा जाता है, तो उसके अंदर की नमी भाप बन जाती है। यह भाप रोटी को फुला देती है। साथ ही, गर्मी से आटे में मौजूद ग्लूटेन और स्टार्च मिलकर रोटी को एक अच्छा स्वाद और बनावट देते हैं।

5. प्याज़ का भुनना- कच्चा प्याज़ थोड़ा तीखा होता है, लेकिन जब हम उसे धीमी आँच पर भुनते हैं, तो उसमें मौजूद प्राकृतिक शर्करा टूट जाती है और वह मीठा स्वाद देने लगता है। साथ ही उसका रंग भी सुनहरा भूरा हो जाता है।

6. तड़का लगाना : मसालों की खुशबू का रहस्य- जब हम सरसों, जीरा या हींग जैसे मसाले गर्म तेल में डालते हैं, तो उनसे तेज़ आवाज़ और खुशबू निकलती है। ये इसलिए होता है क्योंकि मसालों के अंदर मौजूद सुगंधित अणु (aromatic compounds) गर्मी से बाहर निकलते हैं और एक नया स्वाद और सुगंध बनाते हैं।

7. चीनी का पिघलना और कैरामेल बनना- जब हम चीनी को गर्म करते हैं, तो वह पहले पिघलती है, फिर उसका रंग गहरा होता है और स्वाद भी बदल जाता है। इसे कैरेमलाइजेशन कहते हैं। ये प्रक्रिया मिठाइयों में स्वाद और रंग दोनों बढ़ा देती है।

आप भी बन सकते हैं नन्हे वैज्ञानिक! विज्ञान सिर्फ किताबों में नहीं होता। वह हमारी रसोई में, हमारे चारों ओर होता है।

‘शिक्षा सारथी’ में ‘मम्मी की रसोई: मेरी प्रयोगशाला’ शृंखला आगे भी जारी रहेगी। हर नए अंक में आपको रसोई में छिपे विज्ञान के और भी मजेदार राज पता चलेंगे, जिनमें आप अपनी मम्मी के साथ मिलकर पहचान सकते हैं।

अगले अंक में आप ऐसी ही कुछ और वैज्ञानिक अवधारणाओं से परिचित होंगे! तो जुड़े रहिए और खोजते रहिए रसोई के वैज्ञानिक रहस्य...बस यँ ही पढ़ते रहिए अपनी चहेती पत्रिका ‘शिक्षा सारथी’!

बीआरपी (साइंस)

मोरनी हिन्स, पंचकूला, हरियाणा





परिश्रम से मिलती है सुख की राह

बचपन में किताबों में पढ़ा था- इफ वैलथ इज लॉस्ट, नथिंग इज लॉस्ट, इफ हैलथ इज लॉस्ट, समथिंग इज लॉस्ट, इफ करैक्टर इज लॉस्ट, एवरी थिंग इज लॉस्ट। लेकिन विडंबना देखने कि आज समाज में इसका ठीक उल्टा देखने को मिल रहा है। चरित्र को हमने जैसे अंतिम मानकर भुला दिया है और पैसे को सर्वोपरि बना लिया है। इसका परिणाम धीरे-धीरे हमारे सामने स्पष्ट होता जा रहा है, जिसके चलते जीवन-मृत्यु निरंतर पतन की ओर बढ़ रहे हैं।

यही वजह है कि समृद्धि और संपन्नता के बावजूद हमारी सोच सकारात्मक नहीं रही। परिणामस्वरूप हम अनेक प्रकार के मानसिक और शारीरिक रोगों से घिरते जा रहे हैं। शारीरिक श्रम की कमी के कारण रोग बढ़ते जा रहे हैं। हमने सुख की तलाश में 'दौलत' के पीछे



भागते-भागते जीवन का सबसे बड़ा मूल्य 'परिश्रम' भुला दिया है। जबकि यह निर्विवाद सत्य है कि पसीने से महकता किसान, जवान और श्रमिक व्यायाम की बात नहीं करता, उसका श्रममय जीवन ही उसका व्यायाम है। यही कारण है कि वह स्वस्थ रहता है। यहाँ तक कि 'जवान' शब्द स्वयं 'हमेशा फिट रहने वाले' के लिए प्रयुक्त होता है।

आज एक अत्यंत सार्थक और मार्मिक बोधकथा पढ़ने को मिली, जो हमारे कई प्रश्नों का उत्तर देती है। आप भी इस सुंदर कथा को पढ़िए-

पुराने समय में एक राजा था। उसके पास सभी सुख-सुविधाएँ और असंख्य सेवक-सेविकाएँ थीं, जो हर समय उसकी सेवा में तत्पर रहते थे। लेकिन उसके जीवन में श्रम का कोई स्थान नहीं था। राजा को किसी चीज़ की कमी नहीं थी, फिर भी वह अपने जीवन से सुखी नहीं था, क्योंकि वह निरंतर स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से ग्रस्त रहता था। राजा का उपचार सभी बड़े-बड़े वैद्यों द्वारा किया गया, परंतु कोई लाभ नहीं हुआ। राजा की बढ़ती बीमारी से पूरा दरबार चिंतित हो गया। दरबारियों ने विचार-विमर्श कर राज्य में ऐलान करवा दिया कि जो भी राजा को स्वस्थ कर देगा, उसे असंख्य स्वर्ण मुद्राएँ प्रदान की जाएँगी।

यह घोषणा सुनकर एक वृद्ध महल में आया और बोला, महाराज, यदि आप आज्ञा दें, तो मैं आपकी बीमारी का इलाज कर सकता हूँ। राजा ने उसे आज्ञा दी। वृद्ध बोला, आप किसी पूर्ण सुखी मनुष्य के वस्त्र पहनिए, आप निश्चित ही स्वस्थ और सुखी हो जाएँगे।

राजा के मंत्री और सेवक यह सुनकर हँस पड़े। लेकिन वृद्ध ने दृढ़ता से कहा, महाराज! आपने अनेक उपचार कर लिए हैं, यह उपाय भी आजमाइए। मेरा दावा है कि आप अवश्य लाभ पाएँगे।

राजा ने इस पर सहमति जताई और सेवकों को राज्य की चारों दिशाओं में भेजा गया, परंतु कहीं भी उन्हें कोई पूर्ण सुखी व्यक्ति नहीं मिला। यह सुनकर राजा स्वयं खोज में निकल पड़ा।

गर्मी के दिन थे। राजा थककर एक पेड़ की छाया में विश्राम करने लगा। तभी उसने देखा कि एक मजदूर तपती दोपहर में भी परिश्रम कर रहा है। राजा ने उससे पूछा, क्या तुम पूर्ण सुखी हो? मजदूर ने प्रसन्नतापूर्वक उत्तर दिया, भगवान की कृपा से मैं पूर्ण सुखी हूँ।

राजा ने देखा कि वह मजदूर केवल धोती पहने हुए है और उसका शरीर पसीने से तरबतर है। यह देखकर राजा समझ गया कि परिश्रम से ही सुख की प्राप्ति होती है। राजा महल लौटा, वृद्ध को बहुत सी स्वर्ण मुद्राएँ प्रदान कीं और स्वयं आलस्य त्यागकर परिश्रम करने लगा। कुछ ही समय में वह पूर्ण स्वस्थ और सुखी हो गया।

मित्रो! इस बोधकथा का सार यही है कि आज हम भौतिक सुख-सुविधाओं के इतने आदी हो गए हैं कि हमारे शरीर की रोगों से लड़ने की शक्ति क्षीण होती जा रही है। वास्तव में, श्रम से न केवल हमारी जीवनी शक्ति बढ़ती है, बल्कि पाचन-तंत्र भी ठीक रहता है और हमारे पास नकारात्मक विचारों के लिए समय ही नहीं बचता।

विजय गर्ग,
सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य, मलोट, पंजाब

2025

मई माह

के त्यौहार व विशेष दिवस

- 1 मई - अंतरराष्ट्रीय श्रम दिवस
- 3 मई - विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस।
- 4 मई - विश्व हास्य दिवस
- 7 मई - रवींद्रनाथ टैगोर जयंती
- 8 मई - विश्व रेडक्रॉस दिवस
- 11 मई - मातृ दिवस
- 15 मई - अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस
- 17 मई - विश्व दूरसंचार दिवस
- 18 मई - अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय दिवस
- 21 मई - राष्ट्रीय आतंकवाद विरोधी दिवस
- 22 मई - अंतरराष्ट्रीय जैव विविधता दिवस
- 12 मई - बुद्ध पूर्णिमा
- 23 मई - गुरु गोरक्षनाथ स्मृति दिवस
- 24 मई - महर्षि कश्यप जयंती
- 29 मई - महाराणा प्रताप जयंती
- 30 मई - गुरु अर्जुन देव शहीदी दिवस
- 31 मई - मातेश्वरी देवी अहित्याबाई होल्कर जयंती



'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत् से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत् की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikhsaarthi@gmail.com





International Labour Day: Honoring Workers Worldwide



Introduction

International Labour Day, also known as Labour Day, International Workers' Day, or May Day, is celebrated annually on May 1st. It is a significant occasion recognized globally to honor the economic and social achievements of workers. This day stands as a powerful reminder of the historical struggles of labor movements, the ongoing quest for workers' rights, and the importance of fair working conditions. Over the decades, it has evolved from a day of protest into a broader celebration of the dignity of labor, human rights, and social justice.

Historical Background

The origins of International Labour Day are deeply rooted in the labor union movement of the 19th century, especially in the United States. During the Industrial Revolution, workers often toiled for 12-16 hours a day under hazardous conditions with little pay or protection. The absence of labor laws led to widespread exploitation, prompting the birth of workers'

associations and trade unions.

One of the pivotal events that led to the establishment of International Labour Day was the Haymarket Affair in Chicago in 1886. Workers across the U.S. organized a strike on May 1st demanding an eight-hour workday. On May 4th, during a peaceful rally at Haymarket Square, an unknown person threw a bomb at the police, resulting in chaos and several deaths. The incident had a lasting impact on the labor movement and became a symbol of the struggle for workers' rights.

In 1889, the Second International, an organization of socialist and labor parties, declared May 1st as International Workers' Day in honor of the Haymarket martyrs. Since then, it has been commemorated in many countries as a public holiday to promote labor solidarity and advocate for better labor conditions.

Significance of International Labour Day

International Labour Day is more

than a commemoration of historical labor struggles—it is a day of unity, reflection, and activism. Its significance includes:

1. Recognition of Workers' Contributions

Labour Day recognizes the invaluable contributions workers make to economic development, innovation, infrastructure, and societal progress. From construction workers and healthcare providers to educators and service staff, every occupation plays a vital role in shaping a nation.

2. Awareness and Advocacy

The day serves as an opportunity to spotlight ongoing issues in the workplace, such as low wages, unemployment, unsafe working environments, gender inequality, and the lack of social protections. Labour unions and civil society groups use this platform to push for reforms and improved labor laws.

3. Solidarity Across Borders

International Labour Day promotes a sense of global unity among workers, transcending national and cultural boundaries. It highlights that the challenges faced by workers are often universal and that international cooperation is essential for securing fair labor standards.

4. Historical Appreciation

It reminds new generations of the sacrifices made by early labor activists and why the protections we enjoy today—like weekends, paid leave, and minimum wage laws—should never be taken for granted.

Celebrations Around the World

The way Labour Day is celebrated varies by country, but the central theme remains consistent: recognition of labor and advocacy for workers' rights.

- **India:** Labour Day, or "Antarrashtriya Shramik Diwas," is celebrated with rallies, speeches, and events organized by trade unions and political parties. It marks the beginning of labor rights awareness in India, dating back to 1923.
- **United Kingdom:** While not celebrated on May 1st, the UK





observes a May Bank Holiday on the first Monday of May. Trade unions often organize demonstrations and events.

- **United States:** Interestingly, the U.S. observes Labor Day on the first Monday in September, due to the government's attempt to distance the holiday from socialist connotations.
- **China:** Known as "International Workers' Day," it is a major public holiday with a week-long break known as the Golden Week, during which people travel, rest, and participate in cultural events.
- **Russia and Eastern Europe:** May Day retains strong political undertones, with parades, speeches, and often government-sponsored events.
- **Cuba:** The day is marked with massive parades in Havana, often led by the president, showcasing labor solidarity and national pride.

Modern Challenges Facing the Global Workforce

Although much progress has been made since the 19th century, today's workforce still faces numerous challenges:

1. Gig Economy and Informal Labor

The rise of the gig economy, particularly digital platforms like Uber and Deliveroo, has raised questions about job security, benefits, and fair pay for gig workers. Informal labor remains unregulated in many parts of the world, leaving millions without protections.

2. Gender Disparities

Women often face lower wages, harassment, and lack of opportunities for advancement. Gender inequality in the workplace remains a critical issue that Labour Day events continue to address.

3. Child Labor and Exploitation

In developing countries, child labor is still a grim reality. Labour Day campaigns often focus on eliminating such practices through stricter laws and better access to education.

4. Post-Pandemic Realities



The COVID-19 pandemic exposed the vulnerabilities of healthcare workers, delivery staff, and others in essential roles. It highlighted the urgent need for better working conditions and mental health support.

The Role of Trade Unions and Workers' Movements

Trade unions play a pivotal role in advocating for labor rights. They organize workers, bargain for better terms, and represent workers' voices in policymaking. Labour Day is a moment for unions to reflect on past achievements and strategize for future campaigns.

Digitalization and artificial intelligence are transforming the labor landscape, prompting unions to rethink their approach to worker representation. While automation may displace some jobs, it also presents an opportunity for unions to push for reskilling programs, universal basic income, and worker participation in corporate governance.

Labour Day in the Future

As we move further into the 21st century, the relevance of International Labour Day will continue to evolve. With the rise of remote work, artificial intelligence, climate change, and globalization, the very definition of

work is shifting. Future celebrations of Labour Day will likely include:

- **Focus on Work-Life Balance:** Advocating for mental well-being and flexible working hours.
- **Climate Justice:** Linking labor rights with sustainable development and green jobs.
- **Inclusive Workspaces:** Ensuring equity and diversity are upheld in every profession.
- **Youth Employment:** Tackling unemployment among young people through innovation and entrepreneurship.

Conclusion

International Labour Day is a tribute to the labor force's resilience, dignity, and courage across history and geographies. It is a reminder that behind every skyscraper, meal, app, or hospital bed, there is a worker whose effort fuels society's growth. While the nature of work is evolving rapidly, the core values of justice, fairness, and respect for labor remain as crucial as ever.

On May 1st, let us not only commemorate the victories of the past but also renew our commitment to a future where every worker, in every corner of the world, is treated with dignity and empowered with opportunity.





World Red Cross Day: Celebrating Humanity and Compassion

Introduction

World Red Cross Day, celebrated every year on May 8, commemorates the birth anniversary of Henry Dunant, the founder of the International Committee of the Red Cross (ICRC) and the first recipient of the Nobel Peace Prize. The day is observed globally to recognize and honor the efforts of Red Cross and Red Crescent volunteers, who offer humanitarian aid to people in distress due to wars, natural disasters, and health crises. The spirit of this day is deeply rooted in compassion, neutrality, impartiality, and service to humanity.

Origins and Historical Significance

The history of World Red Cross Day dates back to the 19th century. In 1859, during the Battle of Solferino, Henry Dunant witnessed the horrific suffering of thousands of wounded soldiers abandoned without medical assistance. Deeply moved by the scene, he organized local villagers to care for the wounded, regardless of their nationality. This experience led him to write "A Memory of Solferino", which inspired the establishment of voluntary relief organizations and led to the founding of the International Committee of the Red Cross in 1863.

The first Geneva Convention in 1864, which aimed to protect wounded soldiers and medical personnel during wartime, was a direct result of Dunant's efforts. His contributions were formally acknowledged when he received the first Nobel Peace Prize in 1901.

World Red Cross Day was first officially celebrated in 1948, after the proposal by the International Federation of Red Cross and Red Crescent Societies (IFRC). The date, May 8, was chosen to honor Henry Dunant's birth anniversary.

The Mission of the Red Cross and Red Crescent Movement

The International Red Cross and Red Crescent Movement is one of the world's largest humanitarian networks, consisting of:

1. The International Committee of the Red Cross (ICRC)
2. The International Federation of Red





Cross and Red Crescent Societies (IFRC)

3. 192 National Societies operating in individual countries

These bodies work in unison to provide emergency assistance, disaster relief, health services, and support in armed conflicts. The movement operates under seven fundamental principles:

1. **Humanity** – Alleviating human suffering wherever it may be found.
2. **Impartiality** – No discrimination based on nationality, race, religious beliefs, or political opinions.
3. **Neutrality** – Remaining neutral in conflicts to retain trust from all parties.
4. **Independence** – Maintaining autonomy to act according to Red Cross principles.
5. **Voluntary Service** – A non-profit, volunteer-led organization.
6. **Unity** – There can only be one Red Cross or Red Crescent Society in any one country.
7. **Universality** – All societies have equal status and share equal responsibilities.

These principles guide all Red Cross activities and ensure the organization remains a symbol of hope in times of despair.

Why World Red Cross Day Matters

World Red Cross Day is more than a tribute to Henry Dunant; it is a celebration of humanitarian values and volunteerism. Its significance lies in several key aspects:

1. Honoring Humanitarian Workers

The day recognizes the selfless contributions of Red Cross and Red Crescent volunteers who risk their lives to provide medical aid, food, shelter, and psychological support to those in crisis.

2. Spreading Awareness

It provides an opportunity to educate the public about the Red Cross's mission and to raise awareness



about humanitarian needs around the world.

3. Promoting Volunteerism

The celebration encourages citizen involvement in humanitarian work. Many National Societies use the occasion to launch recruitment campaigns for new volunteers.

4. Encouraging Global Unity

World Red Cross Day promotes a sense of global solidarity, reminding us that compassion knows no borders.

Themes of World Red Cross Day

Each year, World Red Cross Day is celebrated with a specific

theme, reflecting the most pressing humanitarian issues of the time. Themes in the past have included:

- 2023: “Everything we do comes #fromtheheart”
- 2022: “Be Human Kind”
- 2021: “Unstoppable”

These themes are used to highlight the emotional and personal aspects of humanitarian work, showcasing the resilience and empathy of Red Cross volunteers and staff.

Activities and Celebrations Around the World

Different countries and Red Cross





Societies commemorate the day through various events, including:

- **Public Awareness Campaigns:** Posters, social media outreach, and community programs to educate the public about humanitarian values.
- **Volunteer Appreciation Ceremonies:** Awarding certificates and honors to outstanding volunteers.
- **Fundraising Events:** Organizing charity walks, blood donation drives, and cultural events to raise funds for ongoing relief efforts.
- **Health Camps and Emergency Drills:** Providing free health check-ups, first aid training, and disaster preparedness sessions.
- **School Programs:** Engaging students in drawing competitions, essay writing, and Red Cross educational activities.

These events collectively reinforce the importance of compassion, readiness, and service in addressing global challenges.

Red Cross in Action: Global Contributions

The Red Cross has a long history of impactful humanitarian work:

- **Disaster Response:** From the

2004 Indian Ocean tsunami to the Haiti earthquake in 2010, the Red Cross has provided life-saving aid to millions affected by natural disasters.

- **Conflict Zones:** The ICRC plays a crucial role in providing neutral humanitarian support in war-torn areas like Syria, Afghanistan, and Ukraine.
- **Health Crises:** During the Ebola outbreak and the COVID-19 pandemic, Red Cross societies were pivotal in spreading public health awareness, supporting vaccination campaigns, and ensuring access to medical supplies.
- **Refugee Support:** The Red Cross assists displaced individuals by offering shelter, tracing missing family members, and facilitating access to basic necessities.

Challenges Facing the Red Cross Movement

Despite its global reach and positive impact, the Red Cross faces several challenges:

- **Funding Shortages:** As crises multiply, so do the financial demands. Meeting global

humanitarian needs requires more consistent and diversified funding.

- **Volunteer Safety:** Volunteers often operate in dangerous conditions, risking their lives in conflict zones or during health emergencies.
- **Climate Change:** The increase in climate-related disasters is stretching the organization's resources and response capabilities.
- **Political Barriers:** In some regions, governments and armed groups hinder the neutrality of humanitarian operations.

Overcoming these challenges requires continued international cooperation, advocacy, and public support.

The Red Cross in India

The Indian Red Cross Society (IRCS) was established in 1920 and is one of the most active national societies in the world. It plays a key role in disaster relief, health education, first aid training, and blood bank services. On World Red Cross Day, IRCS organizes community events, medical camps, and youth engagement programs across the country.

Conclusion

World Red Cross Day is a powerful reminder of the enduring relevance of humanitarian work in a world marked by conflict, inequality, and disaster. Celebrating this day means celebrating the best of humanity — empathy, selflessness, and solidarity. As we honor the legacy of Henry Dunant and the millions of Red Cross volunteers, we are also reminded of our shared responsibility to support and uplift those in need.

In a world where suffering persists and new challenges arise every day, the principles of the Red Cross remain more vital than ever. Let World Red Cross Day inspire each of us to contribute—no matter how big or small—to making the world a more compassionate and just place.





Introduction

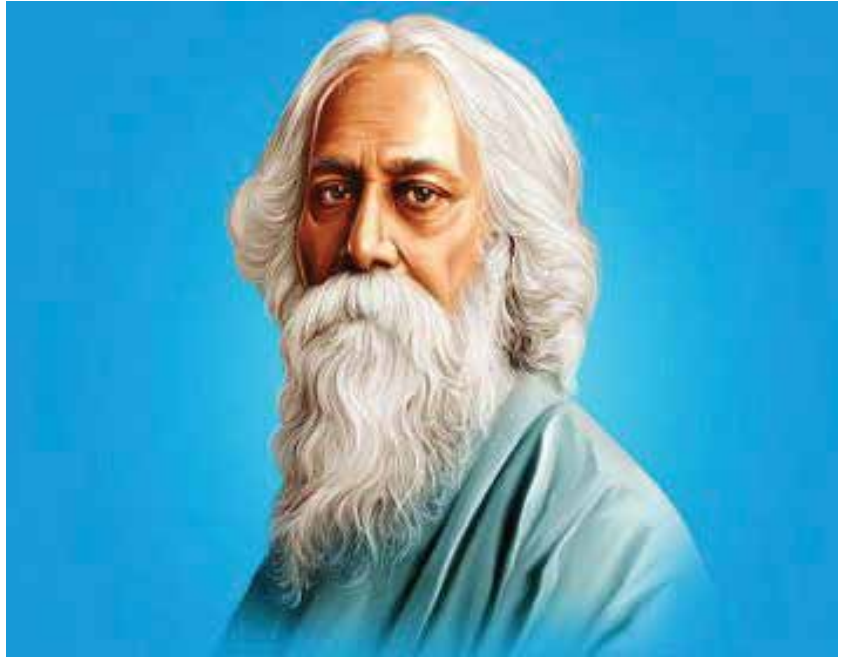
Rabindranath Jayanti, celebrated every year on May 7 (25th Boishakh in the Bengali calendar), marks the birth anniversary of Rabindranath Tagore—a towering figure in Indian literature, music, art, and philosophy. He was not only the first Asian to win the Nobel Prize in Literature (1913) but also a global icon of cultural renaissance, patriotism, and humanitarian values. The day is observed with great reverence, especially in West Bengal, Bangladesh, and among Bengali communities worldwide. Rabindranath Jayanti is more than a birthday celebration; it is an occasion to reflect on the timeless legacy of a man who reshaped Indian thought and creativity.

Early Life and Background

Rabindranath Tagore was born on May 7, 1861, into the illustrious Tagore family of Jorasanko in Kolkata. His father, Debendranath Tagore, was a reformer and philosopher, and his family was deeply involved in the Bengal Renaissance. From a young age, Tagore was exposed to music, literature, and the arts.

Although he disliked formal schooling, Tagore received a rich education at home. He traveled to England to study law but soon returned to India, where he pursued his passion for writing and music. Over time, he became a prolific writer of

Rabindranath Jayanti: Celebrating the Legacy of a Literary Genius



poems, plays, songs, essays, novels, and short stories—many of which are now considered classics of Bengali literature.

Nobel Prize and International Recognition

In 1913, Rabindranath Tagore was awarded the Nobel Prize in Literature for his collection of poems, *Gitanjali*

(*Song Offerings*). This not only brought global attention to Indian literature but also established Tagore as an international cultural ambassador. He traveled extensively to countries like Japan, the United States, the United Kingdom, China, and Argentina, spreading his philosophy of unity, peace, and cultural exchange.

Tagore's influence went beyond literature. He engaged with leading intellectuals of his time, including Albert Einstein, Mahatma Gandhi, and W.B. Yeats, and used his voice to advocate for education, nationalism based on humanism, and spiritual freedom.

Rabindranath Jayanti Celebrations

Rabindranath Jayanti is observed with immense enthusiasm, especially in:

- West Bengal





- Bangladesh
- Santiniketan (Visva-Bharati University)
- Cultural institutions across India

Celebrations include:

1. Cultural Programs

Schools, colleges, and cultural organizations organize recitals of Tagore’s poems, songs (Rabindra Sangeet), and dance-dramas (Rabindra Nritya Natya). His literary and musical compositions form the backbone of the day’s festivities.

2. Art Exhibitions and Plays

Tagore was also a talented painter and playwright. Art galleries and theater groups showcase his visual art and dramatizations of his famous plays like Dak Ghar (The Post Office) and Raktakarabi (Red Oleanders).

3. Educational Events

Universities and academic institutions hold seminars, essay competitions, and lectures to highlight Tagore’s contributions to literature, education, and philosophy.

4. Social Media Tributes

In modern times, people pay tribute by sharing Tagore’s quotes, songs, and poetry on digital platforms, making his work accessible to a global audience.

Contributions to Literature and Music

Rabindranath Tagore’s literary oeuvre is vast and profound. He

authored more than 2,000 songs, over 1,000 poems, and numerous short stories, novels, plays, and essays. Some of his most famous works include:

- **Gitanjali** – A spiritual and poetic collection that won him the Nobel Prize.
- **Gora** – A powerful novel exploring identity, religion, and nationalism.
- **Chokher Bali** – A novel that examines female psychology and widowhood.
- **Kabuliwala** – A touching short story about a friendship between a man from Afghanistan and a Bengali child.

In music, Rabindra Sangeet (Tagore’s compositions) blends classical Indian ragas with lyrical poetry and remains an essential part of Bengali cultural identity. His songs "Jana Gana Mana" and "Amar Shonar Bangla" became the national anthems of India and Bangladesh, respectively—a testament to his unparalleled influence.

Tagore as an Educator and Visionary

Rabindranath Tagore was a pioneer of progressive education. In 1921, he founded Visva-Bharati University in Santiniketan, a unique institution where learning was meant to be in harmony with nature, creativity, and individual freedom. The university attracted scholars and artists from

around the world, promoting intercultural dialogue and the idea of “unity in diversity.”

Tagore believed that education should be holistic, joyful, and rooted in cultural values. His educational philosophy remains relevant even today in discussions around reforming rigid academic systems.

Political Views and Role in Indian Freedom Movement

Though Tagore was not a political activist in the conventional sense, his writings and speeches had a profound impact on the Indian independence movement. He was a strong critic of British colonialism, yet also wary of violent nationalism. In 1919, following the Jallianwala Bagh massacre, he renounced his knighthood in protest—a powerful act of dissent.

Tagore promoted a form of humanist nationalism rooted in ethics, tolerance, and global solidarity. His thoughts often complemented those of Mahatma Gandhi, even though they differed on some ideological fronts.

Philosophy and Spirituality

Rabindranath Tagore’s worldview was a blend of spiritualism, idealism, and universal humanism. Influenced by Upanishadic thought, Baul philosophy, and Western liberalism, he envisioned a world where humanity transcended narrow divisions of race, religion, and





nationality.

He often wrote about the divine in nature, the joy of existence, and the inner awakening of the soul. His poetic language, deeply philosophical yet accessible, continues to inspire people seeking meaning beyond materialism.

Tagore's Global Legacy

Tagore's legacy is not limited to India or Bengal. His writings have been translated into more than 30 languages, and his works have influenced thinkers, artists, and leaders worldwide.

In Latin America, his correspondence with Victoria Ocampo in Argentina is well documented. In Europe, he engaged with literary minds like Romain Rolland. In Asia, he built cultural bridges with Japan and China, promoting pan-Asian unity long before globalization became a buzzword.

Tagore's universalism makes him a symbol of cross-cultural dialogue, peace, and artistic excellence.

Conclusion

Rabindranath Jayanti is a celebration not only of a man but of an entire cultural ethos he helped shape. Tagore's legacy—his poems, music, educational reforms, and philosophical musings—continues to live on in the hearts of millions. His life reminds us of the power of creativity, the depth of human thought, and the beauty of compassion.

As we commemorate Rabindranath Jayanti, we are reminded to keep alive the values he cherished: freedom of thought, love for nature, universal brotherhood, and the pursuit of truth. In an age dominated by materialism and division, Tagore's voice calls us back to simplicity, harmony, and inner richness.

Let Rabindranath Jayanti not be just a date on the calendar, but a time to revisit his works, reignite our cultural consciousness, and reaffirm our commitment to building a just, peaceful, and enlightened world.

Sukh Na

Oh, vast lake drown all my sorrows,
May your silence soak up all my sad tomorrows.
Let your broad horizons broaden mine.
Come heal my body and my mind.

I have long lone walked thy lovely crescent.
At the break of day and under the moon reticent.
Felt thy cool and damp breeze ruffle my hair.
Have seen people walking in joy and despair.

The secluded shady wooded lover's lane,
In the water foreign weeds fight advantage to gain.
The waves whisper in ripples and call my name.
Whistling ducks, singing quails, the emerald forest trail.

Thy forest side to walk is a true pleasure,
Where animals roam in a significant measure.
A deer and baby doe peer at me from shadows curiously,
They gaze shyly through the foliage, grazing peacefully.

Gnarled trees dried and stranded on brown bars of land.
Egrets and crows feed on carrion on exposed strips of sand.
I wander around framed by the mighty Shivalik sentinels.
And sit under the cool shade of the old peepal.

Let me see colors not darkness in thy sunset glow.
In your glassy shimmer let me gather a glimmer of hope.
Boats drift by and kayaks in tandem tranquil grace,
Gliding through the lake's warm embrace.

As rows of rainbow flowers sway gently in the wind.
Let me sit by your side like a long-lost friend.

Dr. Deviyani Singh
devyanisingh@gmail.com



Mother's Day: Honoring the Pillars of Love and Sacrifice

Introduction

Mother's Day is a celebration dedicated to the most selfless and influential figure in our lives—our mothers. Celebrated in many countries around the world, including India, the United States, the United Kingdom, and others, Mother's Day is a day to honor the unconditional love, sacrifices, and contributions that mothers make in our lives. In most countries, including India, it is observed on the second Sunday of May. Although one day is not enough to express gratitude to mothers, Mother's Day serves as a symbolic reminder of the role they play in shaping families, societies, and civilizations.

Historical Origins of Mother's Day

The concept of honoring motherhood is not new. It has ancient

roots in various cultures:

- Ancient Greeks and Romans held festivals in honor of mother goddesses like Rhea and Cybele.
- In early Christian tradition, "Mothering Sunday" was celebrated in Europe during the fourth Sunday of Lent. It was originally a day when Christians would return to their "mother church," but over time, it evolved into a day to honor mothers.

The modern version of Mother's Day as we know it today has its origins in the United States. In the early 20th century, a woman named Anna Jarvis was inspired to establish a national holiday to honor her own mother's dream of recognizing mothers' contributions. After years of campaigning, in 1914, President Woodrow Wilson officially declared

the second Sunday in May as Mother's Day in the U.S. The tradition quickly spread to other countries around the world.

Significance of Mother's Day

Mother's Day is more than just a tradition or commercial holiday. Its deeper significance lies in recognizing the many roles mothers play in our lives:

1. Symbol of Unconditional Love

A mother's love is often considered the purest form of affection. From the time a child is born, a mother nurtures, supports, and protects her child without expecting anything in return.

2. First Teacher and Guide

Mothers are often the first educators, teaching children values, manners, and the difference between right and wrong. Their influence shapes the foundation of a child's character and worldview.

3. Caretaker and Protector

Mothers provide physical and emotional care, often sacrificing their own needs to ensure the wellbeing of their children. They become nurses when we're ill, counselors when we're





sad, and cheerleaders when we succeed.

4. Emotional Anchor

In times of stress or despair, a mother's presence offers unmatched comfort. Her words, hugs, or even just her voice can bring peace and reassurance.

5. Role Model and Leader

Many mothers also serve as role models, balancing work, family responsibilities, and social obligations. Their strength, resilience, and determination inspire future generations.

How Mother's Day Is Celebrated

Mother's Day is celebrated in diverse ways across cultures and communities. While the customs may vary, the emotions remain universal.

1. Gifts and Flowers

Children often present their mothers with flowers (especially carnations and roses), cards, chocolates, and gifts to show appreciation. Handmade gifts and notes are especially cherished.

2. Spending Quality Time

Families come together to celebrate, often treating their mothers to meals, picnics, or a day of relaxation. Some prepare breakfast in bed or handle household chores to give mothers a break.

3. School Programs and Cultural Events

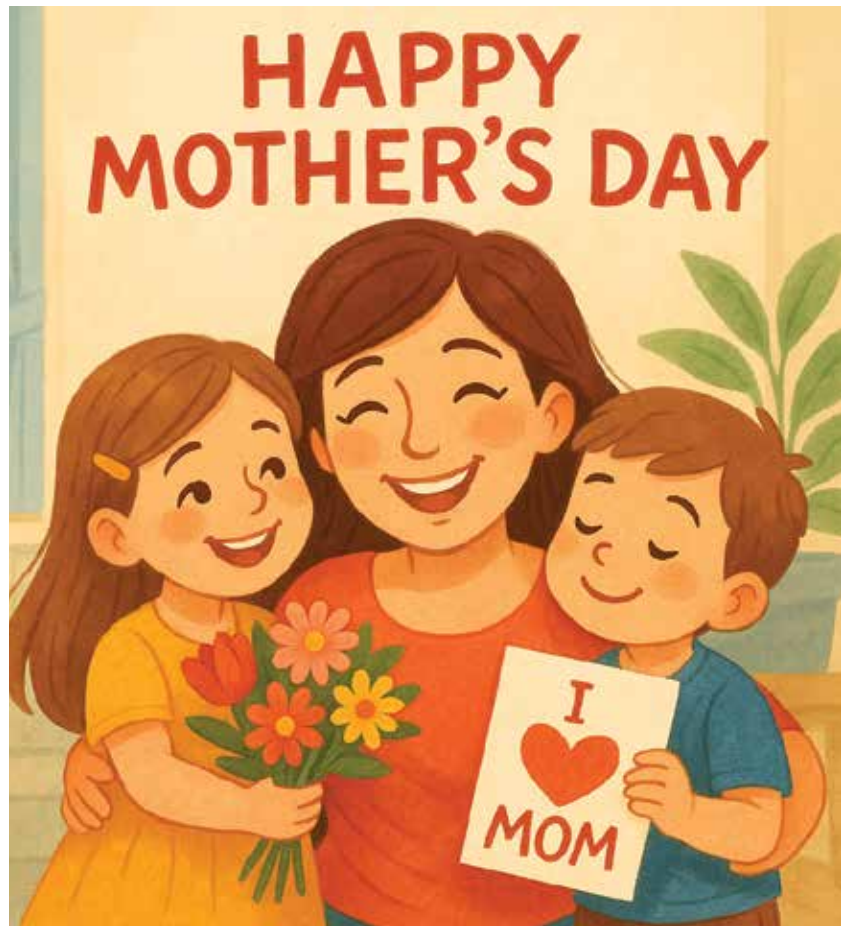
In many schools, children participate in Mother's Day programs where they perform songs, poems, or short plays to express their love.

4. Social Media Tributes

In today's digital age, people take to social media to post heartfelt messages, pictures, and memories with their mothers, often using hashtags like #MothersDay and #LoveYouMom.

5. Charity and Social Work

Some people choose to honor Mother's Day by supporting mothers in need, such as donating to shelters for single mothers or organizations that



support maternal health.

Mother's Day in India

In India, Mother's Day has gained popularity in recent years, especially in urban areas. While the second Sunday of May is widely observed, the cultural respect for mothers is deeply rooted in Indian traditions:

- In Hinduism, the mother is revered as a divine figure. Terms like "Matru Devo Bhava" (the mother is equivalent to God) reflect this sentiment.
- Indian festivals such as Durga Puja and Navratri celebrate mother goddesses and the feminine divine.
- In rural areas, while the Western-style celebration may not be prominent, mothers are honored daily through rituals, blessings, and

family customs.

The Indian version of Mother's Day combines modern celebration with traditional values, creating a unique blend of respect and affection.

Challenges Faced by Mothers

Mother's Day is also a time to acknowledge the challenges and struggles faced by mothers, especially in today's fast-changing world:

1. Balancing Work and Home

Modern mothers often juggle career responsibilities with parenting, facing stress, burnout, and societal pressure to "do it all."

2. Single and Widowed Mothers

Raising children alone comes with emotional, financial, and logistical hardships. These mothers deserve special recognition for their resilience





and courage.

3. Lack of Recognition

Despite their contributions, many mothers—especially homemakers—do not receive the appreciation or respect they deserve. Mother's Day can serve as a reminder to value unpaid domestic labor.

4. Health Issues

Many mothers neglect their own health while caring for their families. Mother's Day can promote awareness of maternal health and wellness.

5. Elderly Mothers

In today's nuclear families, many elderly mothers face loneliness and neglect. Visiting, calling, or simply spending time with them can be the most meaningful gift.

Mother's Day and the Power of Gratitude

Beyond the celebrations, Mother's Day is about gratitude. It encourages us to pause our busy lives and



acknowledge the person who gave us life and nurtured us with unwavering dedication. A simple "Thank you," "I love you," or "I appreciate you" can mean more to a mother than any material gift.

It is also a time to reflect on the universal values of motherhood—nurturing, kindness, sacrifice, and strength. Whether it's your biological mother, grandmother, foster mother,

or a maternal figure in your life, this day is a reminder to express love and appreciation.

Conclusion

Mother's Day is a celebration of love, sacrifice, resilience, and devotion. It is a day to honor not just the act of motherhood, but the essence of what it means to be a mother. As we celebrate this special day, let us remember that the love of a mother is one of life's greatest blessings.

While gifts and cards are appreciated, what mothers value most is love, respect, and time. On this day—and every day—let's recognize the immense contribution of mothers to our lives and strive to make them feel cherished, not just once a year, but every single day.

Let Mother's Day serve as a reminder to celebrate mothers, support them, listen to them, and never take their love for granted.





Introduction

Anti-Terrorism Day is observed every year in India on May 21 to promote awareness about the dangers of terrorism and to foster peace, harmony, and national unity. This date marks the assassination anniversary of former Prime Minister Rajiv Gandhi, who was killed in a terrorist attack in 1991. The observance serves as a stark reminder of the devastating impact terrorism has on society and emphasizes the importance of collective action to counter violence and extremism.

In a world increasingly afflicted by political violence, extremism, and terrorism, Anti-Terrorism Day plays a critical role in encouraging people—especially the youth—to choose peace, dialogue, and coexistence over hatred and destruction.

Historical Background

The observance of Anti-Terrorism Day was officially started by the Government of India in 1991, following the tragic assassination of Rajiv Gandhi at Sriperumbudur in Tamil Nadu. He was killed by a suicide bomber belonging to the Liberation Tigers of Tamil Eelam (LTTE), a militant organization from Sri Lanka.

To honor his memory and raise awareness against the growing threat of terrorism, the government declared May 21 as Anti-Terrorism Day. Since then, it has been observed annually across government offices, educational institutions, and public organizations throughout the country.

The Purpose of Anti-Terrorism Day

The day is not just a tribute to the late Prime Minister, but also a reminder of the following core goals:

1. Spread Awareness

To educate people, especially the youth, about the threats and consequences of terrorism. It encourages a collective stand against acts of violence, radical ideologies, and insurgent groups.

Anti-Terrorism Day: A Stand for Peace and Unity



2. Promote Peace and Unity

To reinforce the values of non-violence, unity, human rights, and communal harmony—fundamental pillars of a democratic society.

3. Condemn Violence

To send a strong message that terrorism, in any form, is unacceptable and to remember the victims of terrorist acts.

4. Encourage Vigilance

To make citizens more aware of their responsibilities in maintaining security and reporting suspicious activities that could prevent future acts of terrorism.

How Anti-Terrorism Day Is Observed

Though not a public holiday, Anti-Terrorism Day is observed through various initiatives:

1. Pledge-Taking Ceremonies

Government offices, schools, and public institutions organize anti-terrorism pledges where employees and students vow to uphold peace and fight against terrorism.

Example Pledge: “We, the people

of India, having abiding faith in our country’s tradition of non-violence and tolerance, hereby solemnly affirm to oppose with our strength all forms of terrorism and violence.”

2. Awareness Campaigns

Public discussions, debates, and exhibitions are held to educate people on how terrorism impacts lives, nations, and global peace.

3. Media and Digital Engagement

Posters, documentaries, social media posts, and webinars are used to reach a wider audience, especially tech-savvy youth.

4. Seminars and Essay Competitions

Educational institutions conduct competitions, seminars, and talks to help students understand terrorism, its causes, and solutions from historical and social perspectives.

5. Tributes to Victims

Memorial events are organized to honor the memory of victims of terrorism, including security personnel who sacrificed their lives in the line of





duty.

Understanding Terrorism

To combat terrorism effectively, it's essential to understand what it is and why it occurs.

1. What is Terrorism?

Terrorism is the use of violence or threats to instill fear, often for political, ideological, or religious purposes. It targets civilians, infrastructure, and governments to create chaos and force compliance.

2. Types of Terrorism

- **Domestic Terrorism:** Acts of violence committed by citizens against their own country (e.g., Maoist insurgencies).
- **International Terrorism:** Involves foreign terrorists or cross-border violence (e.g., 26/11 Mumbai attacks).
- **State-Sponsored Terrorism:** Governments supporting terror groups covertly to achieve strategic goals.

3. Causes of Terrorism

- Political Grievances
- Religious Extremism
- Ethnic Conflicts
- Socio-Economic Inequality
- Foreign Interference
- Radicalization via the Internet and Social Media

Understanding the root causes is essential for developing preventive strategies rather than just reactive measures.

India and the Threat of Terrorism

India has been one of the countries most affected by terrorism, with frequent attacks in regions like Jammu & Kashmir, the Northeast, and major cities like Mumbai and Delhi. Notable terror incidents include:

- 1993 Mumbai Blasts
- 2001 Indian Parliament Attack
- 2008 Mumbai Attacks (26/11)
- 2019 Pulwama Attack
- 2025 Pahalgam Attack

These tragic events have claimed



thousands of innocent lives and challenged national security. In response, India has strengthened its counter-terrorism infrastructure, established agencies like the National Investigation Agency (NIA), and improved cooperation with international partners.

Global Impact of Terrorism

Terrorism is a global problem that transcends borders. Events like 9/11 in the United States, attacks in Paris, London, and the Middle East show that no country is immune. The rise of global terrorist networks like ISIS and Al-Qaeda has made international cooperation essential.

Global Efforts to Fight Terrorism:

- United Nations Counter-Terrorism Committee
- Interpol's Anti-Terrorism Operations
- International Treaties and Conventions
- Information Sharing Between Nations

Despite these efforts, cyberterrorism, lone-wolf attacks, and radicalization via social media present new challenges.

Youth and the Fight Against Terrorism

The youth are particularly vulnerable

to radical ideologies, especially in the digital age. Anti-Terrorism Day serves as a platform to:

- Encourage critical thinking and media literacy to identify and resist propaganda.
- Promote inclusive education, economic opportunity, and civic engagement to prevent alienation.
- Create awareness about the legal consequences of joining or supporting terror groups.

The participation of young people in peacebuilding activities can be a powerful tool against terrorism.

Promoting Peace Over Violence

Ultimately, the aim of Anti-Terrorism Day is not just to oppose terrorism, but to foster a culture of peace. Peace is not merely the absence of war, but the presence of justice, equity, tolerance, and mutual respect.

How We Can Contribute:

- Avoid sharing unverified or inflammatory content online.
- Report suspicious activities to authorities.
- Participate in community programs that promote diversity and understanding.
- Teach children the values of non-violence and respect.

Conclusion

Anti-Terrorism Day is a solemn reminder that violence, hatred, and extremism have no place in a civilized society. While governments and security forces play a critical role in counter-terrorism, every citizen has a role to play in promoting peace and preventing radicalization.

As we commemorate this day, let us remember the innocent lives lost to terrorism, reaffirm our commitment to non-violence, and work towards building a world where dialogue triumphs over division, and peace prevails over fear. Only through collective effort can we defeat the ideology of terror and uphold the values of democracy, unity, and humanity.





Dr. Deviyani Singh



Seeds

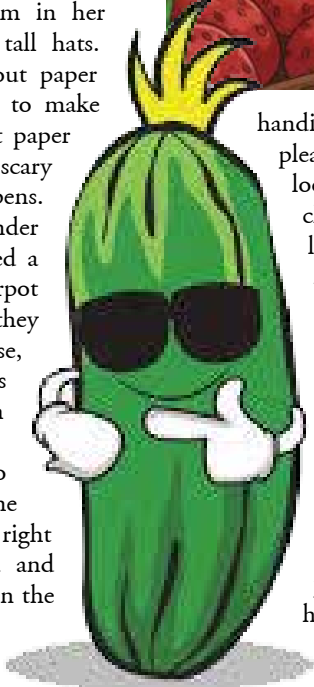
It was a week before Halloween. A little old lady was decorating her garden for her grandson's party. He had finally come home from studies abroad in the USA. Indira loved her grandson dearly. Since his parents had died in a terrible accident, she went out of her way to make up for their absence in his life, showering him with love and gifts as much as her inheritance would allow.

"You don't have to do anything, Granny; my friends will come and do up the place." He drawled.

She waved him away with a kindly smile. "But, Danny dear, you know I love decorating. Go and have the freshly baked lemon coconut cake, it's in the kitchen."

She toiled all morning making spider webs of wool with her shaking hands and hanging two dummies of witches, dressing them in her black midi dresses and tall hats. She innovated, cutting out paper hair and stands of wool to make the witches hair. She put paper masks on them and drew scary eyes with fluorescent felt pens. She placed two brooms under them. Then she concealed a blower behind a flowerpot to make it appear as if they were flying. To her surprise, the blower blew the skirts straight up Marilyn Monroe style!

"Tsk, tsk, that won't do at all." Indira adjusted the fan till the breeze was just right and the witches rotated and waved their hands eerily in the breeze. Then she stepped back to look at her



handiwork and felt immensely pleased. The witches didn't look wicked but had a childlike, mischievous look about them. It reminded her about her favourite childhood comic character, Wendy the good little witch.

She made two scarecrows and a dead body dummy stabbed with a knife. She dipped strips of white cloth in red paint and laid them on his stomach to look like bloody entails. From

her kitchen garden which was adjacent to the sprawling lawns, she fetched a large pumpkin. Hollowed out its innards and carved a grisly zigzagged smiling face and eyes into it. Then she placed a small tea light inside and beamed back at it.

The witches blew about in the October wind; the weather had turned cooler with a very pleasant nip in the air, making it the perfect time for a garden party. She waved good night to them and went to bed. Unknown to her, this house was haunted. She had often heard sounds at night—thumps and knocking and scampering of little feet—but Indira attributed it to the huge rats that inhabited the



large mansion and grounds. They had relentlessly gnawed at every old wooden door and made their way inside. They had a field day running around the house and were experts in eating the food but avoided getting caught in the traps laid out for them.

Before Halloween, the spirits that had haunted this hundred-year-old house came out to play. They were two little twin girls. They had been

cruelly killed in the womb itself when it was found out that their mother was pregnant for the fourth time with girls again. The family was a regressively patriarchal one, which was desperate for male offspring. They could not bear to have two more daughters after having three already. So, one dark night, they had a midwife brought in. The mother was very nervous as she was already five months into the

pregnancy when they managed to have a banned ultrasound done and find out the sex of the fetuses. They had them aborted illegally using crude instruments in that very home. The mother bled excessively and narrowly escaped with her life. The five-month-old fetuses were well developed with discernible fingers, toes, eyelids, and eyelashes. In all, they were the size of two mangoes. The family, however, did not feel any remorse or guilt and buried them unceremoniously in the dead of the night. Coincidentally, at the very spot Indira had chosen to install the witch dummies. After the botched-up abortion, the mother kept bleeding for ten days. She started having hallucinations and reported seeing things around the house. The family thought she was losing her mind so they decided to sell the house and move to their village. Indira had not been told the ugly history of that house by the agent who fooled her into thinking that she had gotten a very good deal.

Those unborn girl children were stuck in limbo. Not having walked the Earth and having left the other world to be born. Their innocent souls were trapped in this strange twilight zone for many years, awaiting to be born. They were alike, like two peas in a pod. They saw the witches flying and decided to possess them.

"Wheee!! Let's make these witches really fly!" They swung about in glee, letting out delightful little squeals.

"These rats are really getting out of hand." Indira muttered in her sleep. Her hearing was slowly getting worse.

The twins saw the carved-out pumpkin.

"Hello Pumpkin, can you give us a big smile, please?"

They waved at it, and the pumpkin's gruesome smile suddenly began getting wider and wider. Since they were of the nether world, they possessed some magical powers. Indira had noticed that her kitchen garden was super





fertile, possibly because she tended to it with such loving care. She didn't know the garden was bewitched. The twins decided to bring all the vegetables to life and imbibe them with human feelings. In their experience, humans were so cruel that it was indeed better to be a vegetable. And thus, from merely haunting the house, they now created an enchanted kitchen garden. The vegetables that had for so long just grown in patches passively besides each other, could now move and developed human emotions.

The tomatoes blushed bright red, amazed at these new feelings. The potatoes suddenly felt like lying on couches and watching TV all day long. The beans felt tempted to spill everyone's secrets. The brinjals started becoming conscious of their royal lineage and purple colour. The carrots wanted to dress seductively and paint the town red along with the turnips. The radishes had bad cases of flatulence and wanted to see the doctor. The peas associated themselves with the twins and wanted to reproduce in the form of triplets and quadruplets; the more multiples, the better. Such a green revolution was coming about in that huge kitchen garden that even Mother Earth trembled. The little hose pipe that watered them all suddenly began feeling inadequate.

"These vegetables seem to be thriving without soil or water. It's as if some magic is pushing them out of the ground and making them grow big and strong. All the plants were super large too." Indira thought out loud as she delighted in this spectacle.

Then, as with humans, these vegetables started having not only positive but negative feelings as well for one another. Once underground, now the potato found that he didn't have to stay in the dark mud but could flourish in the light of day above the ground too. He started having higher aspirations. A sweet potato was sweet on the potato, but he never noticed



her. He had quite a roving eye, and set his heart upon a very pretty pink onion. But the onion was rather pricey and refused to talk to the simple potato even though he showed off his freshly starched Burberry brown dinner jacket. The potato, Tate, found the onion, Nina, irresistible and had eyes only for her. She had many mysterious layers to her personality, which the poor simple

potato dared not unravel for fear of being stung by her pungent tongue. It was said that she made many a suitor cry. She showed off her curves and lovely complexion and ridiculed the potato for being a shapeless blob. Nina actually had a crush on a very cheery red tomato—Tom.

And so it came to pass that Tom and Tate became rivals for the love of the comely Nina. All the vegetables watched this growing rivalry with concern and were worried it may lead to a fight. The potato loved to mash up things, and they were scared that the tomato might end up in a thick soup.

So, they went to the King Brinjal—Raj for help. He stood tall and regal and adjusted the emerald green crown on his head. At his side sat a well-endowed Cabbage, Queen Cabilia, and she fluffed up her majestic flowing lime green multilayered gown. A pair of crisp, sprightly, lettuce fanned her with their leaves. The royal wazir, an old, wizened, and bitter gourd—Karela—studied them with a stern gaze.

"Pray tell me what troubles you, loyal subjects? Why have you come to the King for help?" His voice resounded





in the green house.

The Jackfruit—Jack, who was the strongest of them all and Head of the Kings Guard, told the whole tale.

“Your Majesty, please forgive us for disturbing your peace, but there is going to be a terrible fight. The potato Tate is a rough and tough guy, and he and Tom do not see eye to eye anymore. I’ve heard him say he plans to challenge Tom to a good old-fashioned duel.”

King Raj spoke up, “I don’t know if a duel is such a good idea; they are both round and may just roll around till Tom gets squashed by the harder Tate. That’s why humans never store tomatoes below other vegetables. We really must think of some other solution.”

Karela shook his shrivelled head. “That’s right your Majesty; we do not want the red blood of the tomato spilt over our sacred fields. Can’t we just let Nina decide whom to marry and end the matter?”

“I’m afraid even that might not prevent the stubborn Tate. I see a storm brewing,” boomed King Raj. “What can we do to prevent this?” he questioned the nine gems of his court.

The brother of Queen Cabilia and one in charge of the royal games—Broccoli—Kohli spoke up. He was a big fan of the Indian Cricket Team’s ex-captain, Virat Kohli.



“Oh King Raj, we could have a match of sorts and see who scores the most runs out of Tate and Tom, and the winner could marry pretty Nina.”

Another member of the royal court, Belle, a vibrant red Bell Pepper who loved ballroom dancing and salsa, cooed. “We could organise a ball and see who is more charming and the better dancer.”

The maize just stared at them in amazement. He liked making corny jokes. “I didn’t know a mere spud could nip a romance in the bud!” He grinned, showing finely lined yellow teeth, but no one laughed.

The cucumber and mint were super

cool guys, and nothing could faze them. “We would suggest letting things pass. Nothing is going to really happen.” But the other vegetables disagreed.

Then the wise old grapes opined and whined.

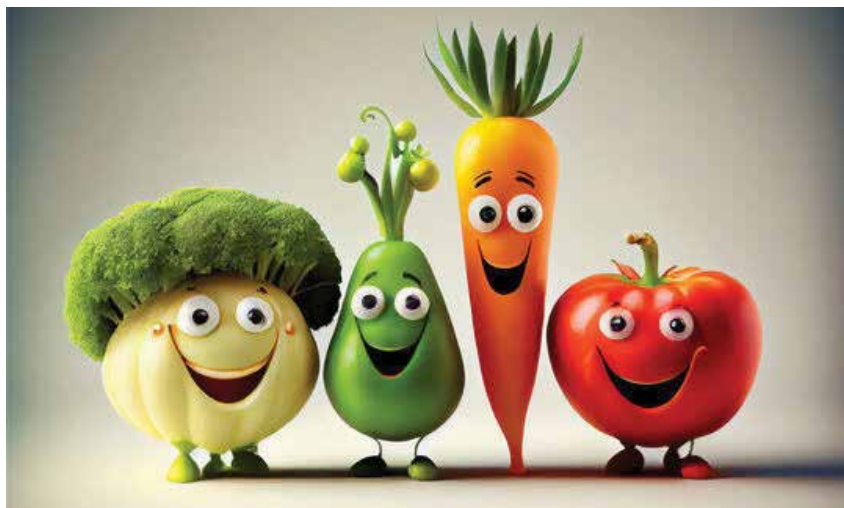
“There is no romance yet; it’s sort of like a love triangle. Tom knows about Nina’s love for him, and Tate is dying of jealousy and may take matters into his own hands soon. Tate is in a hurry to marry Nina before their season is over. I’ve heard that Tom also has taken a fancy for that red-headed siren of a carrot—Carol, and that’s why Tate hates him even more, claiming that he’s not even loyal and deserving of Nina’s love.”

“This is indeed a fine mess.” King Raj groaned. “We must ensure peace in our vegetable kingdom.”

“Did you say peace?” The twin peas in a pod spoke up. “Let’s ask the twins who brought us to life for help. Maybe with their magic they can help return our kingdom to its peaceful state.”

So, all the vegetables, including the royal couple, went to the twins for help. But they were too busy swinging about and squealing. The party had begun, and the vegetables watched in horror as the youngsters posed in front of their very own scarecrow, taking selfies and playing deafeningly loud music. A girl who had had more alcohol than she could handle came to the edge of the vegetable patch and threw up all over the poor cauliflower, Kayli. The sticky yellow vomit trickled down her head, mingling with her colour and making her shudder. She looked to the hose pipe for help, who nodded and began spraying water over her. The drunk girl saw the hose pipe moving, thought it was a snake and ran screaming.

A few boys came over to the edge of the vegetable garden to smoke. The hot ash fell on the soft strawberries, who winced in pain. “Humans! alas are we like them now or yet not quite like them? As we existed only to serve others and not create trouble.”





They wondered. The strawberries and cherries coughed with all that smoke they were not used to. They were rather like an angel's kiss in spring, and they really didn't like these man-made things, especially hot ash.

The herbs listened disinterestedly, softly humming a tune. They liked just being sprinkled lightly on the top and did not like to get involved in others' affairs and hot messes. Parsley, sage, rosemary, and thyme were more interested in heading out to the fair. The red hot chilly's though loved gossip and getting into people's affairs to spice things up.

Just then a couple from the party went to a dark patch in the vegetable garden behind the trellis of the bottle gourd vine to get cosy. The chillies were very excited to see them and whistled. The bottle gourd vine stretched out its tendrils and began tickling the boys' ears just as he was about to kiss the girl. He looked about frightened and the gourds started swinging about together like pendulums hitting them, till the couple ran away. They were becoming evil just like the mercurial villain 'Loki' from the Avengers and Marvel Comics.

The twins, having had their fill of playing with the witches' hair and dresses, now turned their attention to the vegetable patch. They were stunned to see them all looking so worried instead of enjoying the party. Only the beetroots were rooting for the music and dancing to the beat. The okra too loved music and played a little piano with her delicate ladies' fingers on which she loved to paint the latest neon shades of nail polish.

"What ails you all? Even the ginger seems sick with worry!" The twins chimed.

"Oh, magical twins, help us please, or war will ensue in this beautiful garden. You must do something before it is too late." The turmeric wanted to heal everything and get to the root of the problem real fast.

"Ah! roots it is then!" The twins exclaimed in unison. "You have given us



an idea, like seeds planted and waiting to bloom. We will whisper in Granny's ear that she needs to preserve some prime vegetables for the next season. So, she will have to select the healthiest potato, tomato, and onion and allow them to flower so she can collect seeds for the next season. This way, all three of them will be assured of a life beyond this life. And thus, they will not need to rush to achieve their goals in this life's season but will see some purpose in just existing peacefully and giving the old lady some beautiful seeds to plant. This will make them think beyond their normal selfish lives. For it seems that in our magic experiment we have indeed imbibed you selfless vegetables with some human-like selfish qualities, and we need to take care of that."

Having said that, the twins waved their hands, and lo and behold, all three of them—Tate, Tom, and Nina—began producing beautiful flowers that would in turn produce high-quality seeds.

"Now Tate, Tom, and Nina, you must not fight or be bitter in this life but enjoy every moment. You must flower and wait to be born, just like us. But that waiting must not be painful but a joy." The twins advised.

In curing the vegetable garden, the twins found their solace too, as they enjoyed even their hauntings and waited to be born next year in the new season to Indira's grandson, who had just hooked up with a beautiful girl that very Halloween night.

deviyanisingh@gmail.com





आदरणीय संपादक महोदय!
सप्रेम नमस्कार।

अप्रैल का 'शिक्षा सारथी' अंक पढ़कर अत्यंत प्रसन्नता हुई। विशेषकर प्रदेश भर में प्रवेश उत्सव की धूम तथा ड्रॉपआउट घटाने में विद्यालय प्रबंधन समितियों की भूमिका जैसे लेख वर्तमान में चल रहे शैक्षिक अभियानों को जीवंत और प्रेरक ढंग से प्रस्तुत करते हैं। संपादकीय और कविता 'नामांकन जारी है' के माध्यम से अभियान को जिस स्पष्टता और दिशा के साथ समझाया गया है, वह निश्चित ही

शिक्षकों और अभिभावकों दोनों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होगा।

'मम्मी की रसोई, मेरी प्रयोगशाला' लेख ने तो विज्ञान शिक्षण को बच्चों की दृष्टि से बहुत ही रोचक बना दिया है। ऐसे लेख न केवल छात्रों में विज्ञान के प्रति रुचि बढ़ाते हैं, बल्कि घर और विद्यालय के बीच की दूरी को भी पाटते हैं।

आपके इस प्रयास के लिए हार्दिक बधाई। कृपया इसी तरह शिक्षा जगत् को प्रेरित करने वाली सामग्री हमारे समक्ष लाते रहें।

कैवर पाल

प्राथमिक अध्यापक

राजकीय मॉडल संस्कृति प्राथमिक विद्यालय
सैक्टर-25, पंचकूला



प्रिय संपादक महोदय!
सप्रेम नमस्कार।

अप्रैल माह की 'शिक्षा सारथी' पत्रिका अत्यंत उपयोगी, प्रेरणादायक और नवाचारों से भरपूर रही। खेल-खेल में विज्ञान और 'निपुण बनेंगे, निपुण बनाएंगे' जैसी रचनाएँ शिक्षण को नए दृष्टिकोण से देखने की प्रेरणा देती हैं। 'अभयः अनुशासन, प्रतिभा और परिश्रम की मिसाल' जैसे प्रेरक चरित्र लेख छात्रों के भीतर आत्मविश्वास जगाने का कार्य करते हैं।

मनाली एडवेंचर कैम्प पर आधारित विवरण को पढ़कर बच्चों की रोमांचक और अनुशासित यात्रा का सुंदर चित्र सामने आया। ऐसे लेख न केवल विद्यार्थियों को प्रेरित करते हैं, बल्कि अभिभावकों का भी सरकारी विद्यालयों पर विश्वास बढ़ाते हैं।

आपकी टीम को इस सराहनीय प्रयास के लिए धन्यवाद देती हूँ और आशा करती हूँ कि आने वाले अंकों में भी ऐसी ही गुणवत्ता बनी रहेगी।

सुनीता कुमारी

संस्कृत अध्यापिका

राजकीय माध्यमिक विद्यालय बजाड़
जिला- महेंद्रगढ़, हरियाणा



इन्हें अब आसमाँ की सब हदों से पार होने दो

किनारों के सफ़ीनों को जरा मझधार होने दो
इन्हें तूफान लहरों से जरा दो-चार होने दो

नये हैं रास्ते इनके नयी हैं मजिलें इनकी
भरा है जोश कदमों में इन्हें रफ़्तार होने दो

परिदे ये सभी तैयार हैं परवाज की खातिर
इन्हें अब आसमाँ की सब हदों से पार होने दो

बड़ा विश्वास है खुद पर बहुत सपने हैं आँखों में
दिलों की ख्वाहिशें इनकी सभी गुलज़ार होने दो

बनाओ मत इन्हें वारिस पुराने से उसूलों का
बदलने दो रिवाजों को नया संसार होने दो

उबलता खून है इनमें नया निज़ाम है इनका
इन्हीं की जिंदगी का अब इन्हें हक़दार होने दो

डरेगा कब तलक इनका ज़हन ज़ालिम ज़माने से
न समझो तिपल तुम इनको इन्हें दिलदार होने दो

खुदा ने हर बशर भेजा ज़माने में हुनर देकर
कभी हथियार मत देना इन्हें औज़ार होने दो

डॉ. तिलक सेठी

प्रोफेसर, गुरु जम्भेश्वर यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड
टेक्नोलॉजी, हिसार, हरियाणा

मेजर संदीप सागर
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
सैक्टर-7, पंचकूला, हरियाणा



सरकारी विद्यालयों को उत्कृष्ट

बनाने हेतु चलाए जा रहे अन्य नवाचार व
कल्याणकारी कदम



उच्च शिक्षा प्राप्त
प्रशिक्षित एवं मेहनती
अध्यापक, जिससे
विद्यार्थी-अध्यापक
अनुपात समुचित हुआ



CCE के अन्तर्गत
नियमित मूल्यांकन एवं
SAT के माध्यम से
परीक्षा (Avsar Mobile
App) (कक्षा 6-8 तक)



प्रत्येक माह बच्चे की
प्रगति के बारे में
अभिभावकों के साथ
बैठक का आयोजन
करना (PTM)



बच्चों के लिए निःशुल्क
स्वास्थ्य जाँच एवं उपचार
सुविधा (बाल स्वास्थ्य
कार्यक्रम) SEHAT
Programme



राज्य में 241 PM
SHRI स्कूल संचालित
हैं, जिनमें GMSSSS
जैसी सभी सुविधाएँ
उपलब्ध हैं



राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय
सहपाठ्य गतिविधियों
को प्रोत्साहित करना
और खेलो इंडिया स्कूल
गेम्स में शानदार प्रदर्शन



प्रत्येक विद्यालय में
Quiz Club के माध्यम
से गतिविधियाँ, कौन
बनेगा लखपति
प्रतियोगिता



जीवन कौशल शिक्षा,
किशोरावस्था शिक्षा,
परामर्श एवं मार्गदर्शन
व्यवस्था



कलस्टर स्तर पर विज्ञान शिक्षा हेतु विशेष प्रयास,
जैसे STEM लैब की स्थापना



छात्र परिवहन सुरक्षा योजना तहत 22 जिलों के 1-1 ब्लॉक में एक
किलोमीटर से अधिक दूरी के स्कूलों में निःशुल्क परिवहन सुविधा
उपलब्ध है



विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा | शिक्षा सदन, सेक्टर-5, पंचकूला (हरियाणा)-134109